द्विमासिक
मई-जुन १९९२
वर्ष : १
अंक : ६

सदैव प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है।

सिंहस्थ पर्व उज्जैन में 'संत श्री आसारामजी नगर' का मुख्य प्रवेशद्वार।
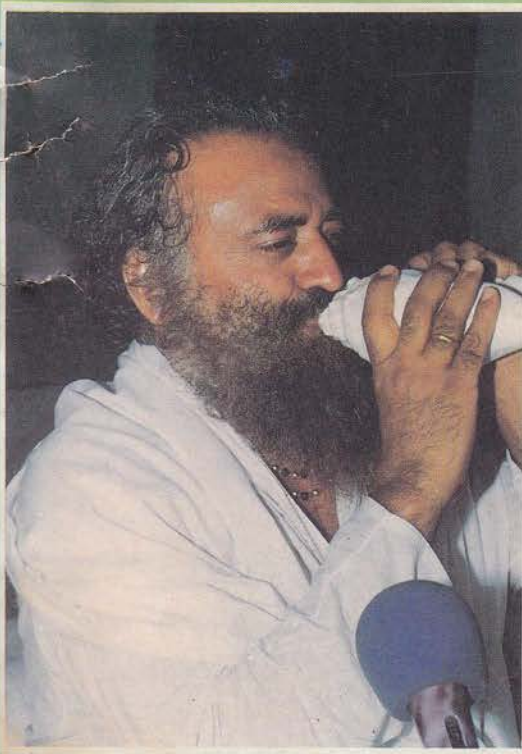
श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र के मैदान में शंखनाद किया था और पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू ने सिंहस्थ कुंभ पर्व उज्जैन में प्राचीन भारत की ब्रह्मविद्या का... प्रभु-प्रेम का... योग एवं वेदान्त-अमृत का शंखनाद गुंजा दिया।

अगम निगम के ओलिया पूज्यश्री की अनुभववाणी का रसपान करते हुए रामायण कथाकार श्री मोरारी बापू... (सिंहस्थ कुंभ पर्व, उज्जैन में)

पूज्य बापू के आशीर्वाद लेते हुए उज्जैन सिंहस्थ मेला प्रभारी मंत्री श्री बाबुलाल जैन और ग्वालियर की राजमाता विजयाराजे सिंधिया...

# ऋषि प्रसाद

सदैव प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है।


वर्ष : १

अंक : ६

मई - जुन १९९२

तंत्री : के. आर. पटेल

शुल्क वार्षिक : रु. २२

त्रिवार्षिक : रु. ६०

परदेश में वार्षिक : US $ २२ (डॉलर)

त्रिवार्षिक : US $ ६० (डॉलर)

* कार्यालय *

'ऋषि प्रसाद'

श्री योग वेदान्त सेवा समिति

संत श्री आसारामजी आश्रम

साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५

फोन : ४८६३१०, ४८६७०२

**परदेश में शुल्क भरने का पता :**

International Yoga Vedanta Seva Samiti
8 Williams Crest,
Park Ridge, N.J. 07656 U.S.A.
Phone : (201) - 930 - 9195

टाईप सेटींग : फोटोटेक्स्ट.

प्रकाशक और मुद्रक : श्री के. आर. पटेल

श्री योग वेदान्त सेवा समिति,

संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, साबरमती,

अहमदाबाद-३८० ००५ ने

अंकुर ऑफसेट, गोमतीपुर, अहमदाबाद में छापकर

प्रकाशित किया।




# अनुक्रम

**'ऋषि प्रसाद' हर दो महीने में ९ वीं तारीख को प्रकाशित होता है।**

भी केदियों का स्थायी उपकार नहीं कर पाये। एक व्यक्ति ने आकर जेल के ताले ही खोल दिये और सबसे कहा : "तुम मुक्त हो, जहाँ चाहो जा सकते हो।" यह मुक्ति का सुख देनेवाला सबसे महान परोपकारी था।

इसी प्रकार हमें संसार की चीज-वस्तुएँ, पद-प्रतिष्ठा, कुटुंब-परिवार आदि सब कुछ मिला देनेवाला कोई व्यक्ति हो सकता है परन्तु सद्गुरु-संत के उपकार की बराबरी कोई नहीं कर सकता। सद्गुरु जो उपकार करते हैं उससे कोई उऋण भी नहीं हो सकता। हम कुछ नम्र प्रयास करें तो यही हो सकता है कि उनका ज्ञान अनजान, अज्ञान, दुःखी, अशांत, हताश, निराश, गुमराह एवं मुमुक्षुओं को बाँटा जाय ताकि प्रत्येक मनुष्य जो कि ईश्वर का सनातन अंश है, वह अपने विमल, सहज सुखराशि स्वरूप में जग जाय। जगत की आसक्ति, ममता से ऊपर उठकर अपने आत्मा-परमात्मा से मुलाकात कर ले।

'ऋषि प्रसाद' का दूसरा वर्ष पूरा हुआ है। एक छोटे-से अंतराल में ही साधकों, भक्तों, जिज्ञासुओं, श्रद्धालुओं एवं आम जनता ने बड़ी उत्सुकता, आदर, सेवाभाव, परोपकार, सुहृदयता के भावों से भरकर इसका स्वीकार किया, जन-जन में फैलाया। जो पाँच हज़ार सभ्यों के लिए एक प्राथमिक योजना थी, वह अभी इकसठ हज़ार तक पहुँची है, गुजराती, हिन्दी, हिन्दुस्तानी और परदेशियों तक पहुँची है। हम और आप मिलकर और भी प्रयन्त करेंगे कि गुजरात का गाँव-गाँव, देश का हर राज्य और विदेश में भी इसका प्रसार फूले फले। इसमें हम अपना पूरा मनोयोग एवं बल जुटायेंगे।

त्रिताप से तप्त संसार में गीता, रामायण, महाभारत, वेद, उपनिषद और संतों की अनुभववाणी की पुण्य सलिला को फैलाकर इस पुण्यकार्य में जो भागीदार हो रहे हैं, वे धन्य हैं! भगवान उन्हें उत्साह, आरोग्य और दीर्घायु दें...

**– श्री योग वेदांत सेवा समिति**

*

**ईश्वर अंश जीव अविनाशी।**
**चेतन विमल सहज सुखराशि॥**

ईश्वर का अंश और सहज सुखराशि होते हुए भी अपने आत्म-साम्राज्य में मनुष्य प्रतिष्ठित नहीं हो पा रहा है। यह बड़े आश्चर्य की बात है।

युधिष्ठिर यक्ष से कहते हैं :

**अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यममन्दिरम्।**
**शेषास्तिष्ठन्तुमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम्॥**

प्रतिदिन प्राणी यमलोक को जा रहे हैं। फिर भी शेष लोग यहाँ स्थायी रहने की इच्छा करते हैं, इससे बड़ा आश्चर्य क्या है?

आत्म-साम्राज्य को छोड़कर जगत के विनश्वर पदार्थ, परिस्थिति और व्यक्तियों के मोह में पड़ जाना कोई बुद्धिमानी नहीं है। सबसे बड़ा बुद्धिमान वही है, जो प्राणों का अंत होने से पहले प्राणाधार में, सर्वाधार में अपनी चेतना को जोड़ दे।

वह बड़ा परोपकारी है, महान उपकारी है, जो जीवात्मा को अपने इस महान लक्ष्य की सिद्धि में सहयोग देता है। वह भी अतुल पुण्य पा लेता है, जो किसीके भगवत्प्राप्ति के मार्ग का दिग्दर्शन करता है, जहाँ अमृत का आस्वाद मिलता है, आत्मशांति के स्रोत का जहाँ उद्गम-स्थान है।

किसी जेल में केदी सड़ रहे थे। भूख, प्यास, गरमी, वस्त्र आदि का दुःख पा रहे थे। किसी दानी ने दयावश उन्हें एक दिन के लिए मिष्टान्न भोजन खिला दिया। किसी और ने ठंडा शरबत पिलाया, अन्य ने नये कपड़े पहनाये, किन्तु वे तीनों मिलकर

**ये वदन्ति नरा नित्यं हरिरित्यक्षरद्वयम्।**
**तस्योच्चारण मात्रेण विमुक्तास्ते न संशयः॥**

*'जो 'हरि' इस दो अक्षरवाले नाम को जपते हैं, उसके उच्चारण मात्र से पापों से मुक्त हो जाते हैं, इसमें संशय नहीं है।'*

(पद्मपुराण)

'श्री हरि' नाम जपें और श्रद्धासहित नामजप की पुस्तक लिखें-अथवा ब्रह्मवेत्ता प्रदत्त दिव्य गुरुमंत्र जपें। भोजन और औषध में वह दिव्यता लाता है। श्रद्धा से हरिनाम जपें, लिखें और उसे 'वडदादा' को अर्पण करें तो उससे अंतःकरण में पापमुक्ति का संतोष होगा। अहमदाबाद, सुरत, इंदौर, पंचेड़ के आश्रमों में दैवी वृक्षों की प्रदक्षिणा करके श्रद्धा से मंत्र-लेखन की हुई नोटबुक समर्पित करने से आत्मग्लानि रूप पाप से मुक्ति होकर हृदय में संतुष्टि का अनुभव होगा। गंगाजल में अथवा समुद्र में भी लिखित नामजप प्रवाहित कर सकते हैं।

दुबारा वही पाप न हो ऐसी सावधानी रखें, दृढ़-निश्चय करें, ईश्वर से प्रार्थना करें। अवश्य उन्नति होगी। पापों से दब जाने के लिये तुम्हारा जन्म नहीं हुआ है, पापों से मुक्त होकर हरिरस जगाने के लिये तुम्हारा जन्म हुआ है। अच्छा संग करो, अच्छा संकल्प करो, अच्छे सत्कर्मों में प्रतिदिन तनमन लगाया करो। भौतिक विकास होगा, मानसिक प्रसन्नता और आत्म-उन्नति अवश्य होगी। फिसलो मत। अगर फिसले हो, तो बार-बार मत फिसलो। उठ खड़े हो जाओ। हे मानव! बार-बार प्रार्थना और पुरुषार्थ तुम्हारी नैया किनारे अवश्य लगा देंगे। कभी पलायनवादी विचार मत करो। किन्हीं दुष्ट विचारों को पास फटकने मत दो। जैसे विचार करोगे वैसे बनोगे। अतः तेजस्वी विचार, तेजस्वी कर्म, तेजस्वी पुरुषों का संग करो और प्रभुनाम के रंग से अपने को रंग दो।

हे भैया! शुभाशुभ कर्म और उसके फल शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि तक ही असर करते हैं। तुम ब्रह्मवेत्ता गुरुओं का प्रसाद पा लो। इन सबसे परे, अपने आप में, परमेश्वर स्वभाव में जाग जाओ।

हे साधक! वक्त निरर्थक मत गँवाओ। सावधान! जो भी नौकरी, धंधा, घरकाम या सेवाकार्य करने का अवसर मिले, तत्परता से, उत्साह से करो। लापरवाही या बेवकूफी से कार्य बिगड़ने मत दो। छोटे से छोटा कार्य भी ईश्वर की पूजा समझकर करो। तुम स्वयं अपने ईश्वरीय स्वभाव, आत्मस्वभाव, ब्रह्मस्वभाव में जगने का यत्न करो। कर्म में तुम्हारा कर्मयोग हो जाने दो।

ध्यान-भजन के समय भक्तियोग-ध्यानयोग... कर्म के समय कर्मयोग... सत्संग के समय ज्ञानयोग... गुरुसेवा में गुरुभक्तियोग... यह सलामत योग है, जीवन्मुक्त होने का योग है। जिससे कभी वियोग न हो ऐसे आत्मा-परमात्मा से योग हो जायेगा।

हे अमृतपुत्र ! हे मुक्तात्मा ! हे दिव्यात्मा ! कब तक अपने को सजा देते रहोगे? गिरते रहोगे? उठो... जागो... काम करने का ढंग बदलो... विचार करने का ढंग बदलो... सब ठीक हो जाएगा।

*

## 'ऋषि प्रसाद' के सेवाभावी एजेन्ट भाइयों एवं सदस्यों को निवेदन

(१) 'ऋषि प्रसाद' के सक्रिय सेवाधारी भाइयों की उत्कृष्ट सेवा भावना एवं तत्परता के कारण हम चालू वर्ष में सदस्य संख्या ५१००० का लक्ष्यांक पार करके आगे निकल गये हैं। यह सफलता हांसिल करके सेवाधारी ऐसे उत्साहित बने हैं कि आगामी १९९२-९३ के वर्ष में 'जागंदी ज्योत' के समान ऋषियों के प्रसाद का....'ऋषि प्रसाद' का लाभ १,०८००० सदस्य लेने लग जाएं ऐसा उन्होंने संकल्प किया है।

परम कृपालु परमात्मा एवं सद्गुरुदेव के इस दैवी कार्य में उपरोक्त संकल्प पूर्ण करने के लिए हर एक सेवाधारी एजेन्ट भाई को चालू वर्ष की अपेक्षा दुगुनी संख्या में सदस्य बनाने की तत्परता दिखाना है। आगामी वर्ष में सदस्य बनाने का कार्य शहर शहर में, मुहल्ले मुहल्ले में, गाँव गाँव में खूब तेजी से चलेगा।

(२) 'ऋषि प्रसाद' द्विमासिक के प्रचार-प्रसार के सेवा-कार्य में अगर कोई नये सेवाधारी भाइयों को सक्रिय बनना हो तो 'ऋषि प्रसाद' कार्यालय का सम्पर्क करें।

(३) आगामी वर्ष से सदस्य शुल्क की गिनती इस प्रकार रखी जाएगी :

किसी भी मास से 'ऋषि प्रसाद' के सदस्य बन सकते हैं। उस मास से लेकर १ वर्ष तक यह सदस्यता चालू रहेगी। चालू मास का अंक अगर स्टॉक में नहीं होगा तो दूसरे मास से यह सदस्यता चालू होगी। इस प्रकार हर सदस्य को १२ महीने में कुल ६ अंक प्राप्त होंगे।

(४) 'ऋषि प्रसाद' हर दूसरे महीने ९ वीं दिनांक को प्रकाशित होता है। अंक अगर न मिला हो तो तदनन्तर १० दिन के बाद अपने स्थानीय डाकघर में पूछताछ करने के बाद अपने कायमी सदस्य क्रमांक के साथ 'ऋषि प्रसाद' कार्यालय का संपर्क करें।

**ता. क.** : कागजात के मूल्य गगनगामी हो चले हैं, प्रिन्टींग इत्यादि का लेबर चार्ज बढ़ गया है फिर भी 'ऋषि प्रसाद' के सदस्य शुल्क में कुछ बढ़ौती नहीं की गई है। अतः सदस्य शुल्क यथावत् ही रहेगा। वार्षिक रु. २२ और त्रिवार्षिक रु. ६०.

## विद्यार्थियों के लिए किफायती मूल्यवाली नोटबुक्स

तमाम विद्यार्थी आलम, उनके वालिदों को एवं स्कूल के आचार्यों, शिक्षक बन्धुओं, श्री योग वेदान्त सेवा समितियों के सदस्यों, 'ऋषि प्रसाद' के सेवाभावी एजेन्ट भाइयों एवं प्यारे वाचक गण को शुभ समाचार देते हुए खुशी होती है कि हर वर्ष की भाँति इस बार भी पू. बापू के पावन सन्देश युक्त, बहुरंगी, सुन्दर एवं लेमीनेशन किये हुए टाईटलवाली, हर पान पर दिव्य जीवन के लिए प्रेरणा, शौर्य, साहस, उत्साह तथा अनोखी शक्ति का संचार करा देनेवाले हिन्दी एवं गुजराती सुवाक्यों से सज्ज, सुपर डीलक्ष क्वोलीटी की नोटबुक्स तैयार हो गई है।

अपने इलाके के विद्यार्थी भाई-बहनों को इस स्कीम का लाभ मिल सके इस हेतु ऑर्डर बुक कराने एवं माल प्राप्ति हेतु शीघ्र ही संपर्क करें :

श्री योग वेदान्त सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५. फोन : ४८६३१०, ४८६७०२

# पूज्यपाद स्वामी श्री आसारामजी महाराज की
# अमृतवाणी

[ दिनांक : ११-३-९२ उल्लासनगर ]

"भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का ज्ञान दिया है। श्रीकृष्ण ऐसा बोलते हैं जिससे सबका कल्याण हो सकता है। बात वही बताई जाय जिसको सामनेवाला कर सके। उपाय ऐसा हो कि सामनेवाला जहाँ हो वहीं से साधना करके अपना आत्मकल्याण कर सके। हम भारतवासी सबसे अधिक भाग्यशाली हैं क्योंकि सबके सर्वांगी विकास का रास्ता बतानेवाला गीताग्रंथ हमारे यहाँ मौजुद है।"

विद्वान, मर्मज्ञ गीतावक्ता संत श्री आसारामजी महाराज ने आगे बताया :

"महात्मा गांधी कहते हैं : 'मैं कभी हताश, निराश, चिंतित होता हूँ तो गीतामाता की शरण जाता हूँ। अगर भारत के राजवियों ने, नेताओं ने गीता का ज्ञान आत्मसात् किया होता तो आज के भारत का चित्र कुछ और होता।' भगवान श्रीकृष्ण ऐसे भगवान हैं कि वे भगवान होकर सारथि बनते हैं और सारथि बनकर भी अर्जुन को वह ज्ञान देते हैं जिससे मोहग्रस्त, विषादग्रस्त, कायरता की ओर जानेवाले अर्जुन को अपने कर्तव्य का, अपने स्वधर्म का बोध करा देते हैं।"

तत्त्ववेत्ता संत श्री आसारामजी महाराज ने बताया कि : "नौकर या मुनीम सेठ की मुलाकात का समय एवं ठिकाना बतावे तो उसमें संशय हो सकता है। परंतु जब सेठ खुद अपने मिलने का समय और ठिकाना बतावे तब वह ठीक विश्वसनीय होता है। ऐसे ही भगवान श्रीकृष्ण स्वयं अपने मिलने का उपाय बताते हैं। भगवान कहते हैं : 'चेतना को अन्यगामिनी न करके अभ्यासयोग के द्वारा परम पुरुष को साधक पा लेता है।' अपने को दीन-हीन कभी न मानो। दिनभर सब प्रकार का अभ्यास करते हो उसके साथ योग मिलाओ। परमात्मा है, हर दिल में बैठा हुआ है और सदा रसस्वरूप है। मनुष्य खाता-पीता है, गहने-कपड़े पहनता है, ऐश-आराम करता है, व्यापार-नौकरी करता है, जो कुछ भी करता है वह सब रस के लिए ही करता है। अगर रसस्वरूप, सर्वमय परमात्मा की शरण में जाय, उन्हें प्यार करे तो नित्य रस की प्राप्ति हो जाय।

तुम्हारे पास बढ़िया मोटर हो पर उसे ब्रेक न हो, वह मुड़ न सकती हो तो, वह काम नहीं आयेगी। वैसे ही तुम्हारे मन को ब्रेक लगनी चाहिए। जब जहाँ चाहे वहाँ मुड़ना चाहिए और परमात्मा की प्राप्ति के लिये प्रगति के रास्ते चलना चाहिए। भगवान भगवद्गीता में वह रास्ता बताते हैं।

सुख और दुःख में सम रहने का ज्ञान, परम योग है। एकांत में और भीड़भाड़ में सम रहना, निश्चिंत रहना परम योग है। आप दिनभर जो अच्छा काम करते हो उसे परमात्मा को अर्पण करो एवं जो बुरे कार्य हो जाते हैं उसके लिए सावधान हो जाओ। मान-अपमान, हानि-लाभ की चिंता को छोड़कर जीवन की शाम हो उससे पहले जीवनदाता की मुलाकात कर लो।

दो औषधियों का मेल आयुर्वेद का योग है। दो अंकों का मेल गणित का योग है। चित्तवृत्ति का निरोध यह पतंजलि का योग है। परंतु सब परिस्थितियों में सम रहना भगवान श्रीकृष्ण की गीता का समत्व योग है। कभी कभी एकांत में महापुरुषों के चरणों में उनके संकेत से साधना करके अंतर्मुख होना चाहिए और व्यवहार काल में सम रहने का अभ्यास करना चाहिए। सारा जीवन 'हाय घोड़ा हाय घोड़ा'

**महात्मा गांधी कहते हैं : "मैं कभी हताश, निराश, चिंतित होता हूँ तो गीतामाता की शरण जाता हूँ। अगर भारत के राजवियों ने, नेताओं ने गीता का ज्ञान आत्मसात् किया होता तो आज के भारत का चित्र कुछ और होता।"**

में बरबाद करना नहीं है। गीता के समत्व योग का साक्षात्कार करने के लिए समय निकालना चाहिए।"

**सुख और दुःख में सम रहने का ज्ञान, परम योग है। एकांत में और भीड़भाड़ में सम रहना, निश्चिंत रहना परम योग है।**

पूज्यश्री के आत्मानंद को स्पर्शता हुआ अनुभवसंपन्न सत्संग-कीर्तन में जो सम्मिलित होता है, उसका स्वाद जो एकबार चख लेता है, उसे उसका चस्का ही लग जाता है।

उल्लासनगर में रोज गोल मैदान पूरा खचाखच भर जाता था। कहीं बैठने की तो क्या खड़े रहने की भी जगह रहती नहीं थी। सड़कों पर खड़े होकर श्रद्धालु लोग पूज्यश्री का सत्संग सुनते थे। गोल मैदान समझो पूरा झूम उठा था, वैकुण्ठ बन गया था।

(पेज नं. १२ से जारी...)

है। अतः कृपा की प्रतीक्षा न कीजिए, समीक्षा कीजिए। अपमान, हानि और कष्ट देकर भी वह तुम्हारी उन्नति करता है। मान, सफलता देकर भी वह तुम्हारी उन्नति करता है। उसे धन्यवाद दिया करो। उसे अपना परम सुहृद माना करो। '**तेरे फूलों से भी प्यार, तेरे काँटों से भी प्यार...**' ऐसी भावना से शीघ्र शांति मिलेगी। मन की शांति सामर्थ्य की जननी है।

**नरसिंह मेहता ने पत्नी की मृत्यु में, तुकाराम ने प्रतिकूल पत्नी की प्राप्ति में एवं एकनाथजी ने अनुकूल पत्नी की प्राप्ति में परमात्मा के अनुग्रह का ही दर्शन किया।**

पटाचारा की अशांति और मीमांसा दोनों शुरू हुई। वह बुद्ध के पास पहुँची। पटाचारा से बुद्ध ने कहा : "पटाचारा ! जो कुछ होता है, जीव की उन्नति के लिए, विकास के लिए होता है। तेरे दो पुत्र इस जन्म में तेरे पुत्र थे परंतु न जाने कितनी बार और कितनों के पुत्र हुए और अभी न जाने वे किसकी कोख में होंगे तुझे क्या पता? तेरा पति इस जन्म में तेरा पति था परंतु करोड़ों बार न जाने कितनों का पति बना होगा? पटाचारा ! तू इस जन्म में इस माँ-बाप की बेटी थी, परंतु अगले जन्म के तेरे कौन माँ-बाप हुए होंगे? कितने माँ-बाप बदल गये होंगे यह तुझे पता नहीं। शायद वह पता दिलाने के लिए परमात्मा ने यह व्यवस्था की हो।"

जगत की नश्वरता समझाते हुए बुद्ध ने पटाचारा को उपदेश दिया। पटाचारा ऐसी भिक्षुणी बनी कि उसने एकबार महिलाओं के बीच प्रवचन किया और उसी एक प्रवचन से प्रभावित होकर पांचसौ महिलाएँ साध्वी हो गईं। कहाँ तो जीवन की इतनी भीषण दुःखद अवस्था और कहाँ बुद्ध का मिलना ! और वह ऐसी भिक्षुणी हो गई कि पाँचसौ महिलाएँ एक साथ भिक्षुणी बन पड़ी। अभी सत्संग में उसकी चर्चा होती है।

हम समीक्षा करेंगे तो पता चलेगा कि हर दुःख के पीछे कोई नया सुख छिपा है और सुख के पीछे दुःख छिपा है। हम इतने अनजान हैं कि दुःख के भय से दुःखी होते रहते हैं और सुख में लेपायमान होते रहते हैं। सुख और दुःख की अगर ठीक से समीक्षा करेंगे तो ये सुख और दुःख दोनों हमें जगाने का काम करेंगे।

*

**ध्यान, जप, कीर्तन और शास्त्राध्ययन का तो नियम ही बना लो। इससे अपने दुर्गुण व दुर्विचारों को कुचलकर साधन-सम्पन्न होने में बहुत अच्छी सहाय मिलती है। प्रतिदिन योगासन, प्राणायाम आदि भी नियम से करो जिससे रजो-तमोगुण कम होकर शरीर स्वस्थ रहेगा। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है। जिसका शरीर बीमार रहता है उसके चित्त में अच्छे विचार जल्दी उभरते नहीं। अतः तन-मन स्वस्थ रहे, हृदय में दैवी सद्गुणों का प्रकाश रहे ऐसा अभ्यास डालना चाहिए।**

# होलिकोत्सव में पूज्यश्री का उद्बोधन

"मोटर चाहे जितनी सुन्दर हो, मजबूत हो किन्तु अगर ब्रेक न हो तो वह निरर्थक है। उसी तरह जीवन में व्रत, नियम, संयम आवश्यक हैं। संयमी के जीवन में दीक्षा फलित होती है। गुरु की दीक्षा उसीके जीवन में शीघ्र सुमधुर फल देती है। दीक्षा से जीवन की दिशा मिलती है। जीवन में कुशलता आती है। उससे श्रद्धा और श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है।"

तापी के तट पर होली के पर्व प्रसंग पर आयोजित शिविर के दूसरे दिन देश विदेश से आये हुए हजारों साधक तथा जाहिर जनता की बहुत बड़ी सभा को संबोधित करते हुए पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू ने कहा कि :

"अनदेखी वस्तु या व्यक्ति पर विश्वास करना यह श्रद्धा है। जिसके जीवन में श्रद्धा है; वह श्रद्धा उसके हृदय को रसाल, ज्ञाननिष्ठ, प्रेमी और कोमल बनाती है और हृदय में परमात्मा को प्रगट कराती है। श्रद्धा पापी को निष्पाप, नास्तिक को आस्तिक, अभक्त को भक्त, दुराचारी को सदाचारी, निर्बल को बलवान तथा जिज्ञासु को आत्मसाक्षात्कार करा देती है। जिसके जीवन में श्रद्धा नहीं उसके जीवन में संयम भी नहीं होता। संयमहीन मानव कुछ सफलता प्राप्त भी कर ले तब भी अहंकार में फूल कर अपने सर्वनाश को निमंत्रित करता है। जिसके जीवन में श्रद्धा नहीं है उसके जीवन में दक्षता भी नहीं है।"

देश-विदेश में हरिनाम-कीर्तन की गंगा बहानेवाले, लाखों लोगों के हृदय में परम भक्ति जगानेवाले और समुद्र पार के देशों में भी भारतीय संस्कृति तथा वेदान्त विद्या की दुंदुभि बजानेवाले जीवन्मुक्त पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू ने आगे कहा :

"संसार के विषयों में से थोड़ा सुखाभास होता है, रस आता है किन्तु इस रस से विकारों को उत्तेजन मिलता है, बुद्धि, तेज, बल, स्वास्थ्य नष्ट होता है जबकि भगवद् रस, भगवन्नाम, भगवद्ध्यान से बल, बुद्धि, तेज, स्वास्थ्य का विकास होता है। हरिनाम भवरोग मिटाने की औषधि है एवं भगवद्प्रेम जगाने का साधन है।

सचमुच परमात्मा, शास्त्र, संत की प्रेरणा-आज्ञा अनुसार चलनेवाला अंधश्रद्धालु नहीं है किन्तु अपने मन रूपी सेवक की बात मान कर गलत मार्ग पर चलनेवाला अंधश्रद्धालु है।

जब तक मनुष्य स्वयं शान्त, समचित्त नहीं हो सकता तब तक दूसरे को शान्ति नहीं दे सकता। जो स्वयं भ्रमित, दु:खी, उद्विग्न हो वह दूसरे को सुख, निश्चिन्तता किस तरह दे सकता है? समाज में सुधार करना हो तो पहले अपने में सुधार करो। प्रत्येक व्यक्ति अपना कल्याण करेगा तब समूचे समाज का कल्याण होगा। अपना व्यवहार ऐसा शुद्ध रखो कि जिससे अनीति का धन अपने घर में न आये। दूसरे को सुख प्राप्त हो, अन्य के चित्त में प्रसन्नता बनी रहे ऐसी मधुर वाणी बोलो।

**"होली यह मात्र कंडे लकड़ी के ढेर को जलाने का त्यौहार नहीं है। यह तो साथ साथ चित्त की दुर्बलता दूर करने का, मन की मलीन वासनाओं को जलाने का पवित्र दिन है। आज के दिन से विलासी वासनाओं का त्याग करके परमात्मप्रेम, सद्भावना, सहानुभूति, इष्टनिष्ठा, निर्भयता, स्वधर्मपालन, करुणा दया, अहिंसा आदि दैवी गुणों का अपने जीवन में विकास करना चाहिए। भक्त प्रहलाद जैसी दृढ़ ईश्वरनिष्ठा, सहनशीलता, प्रभुप्रेम, क्षमाशीलता, करुणा, दया, अहिंसा आदि दैवी गुणों का आह्वान करना चाहिये।"**

जगत भगत का मेल नहीं होता। आप साधना करें तो आपकी पत्नी आपको भगवद् मार्ग पर चलने से रोकेगी। पत्नी को उसका पति रोकेगा। यदि दोनों भगवान के मार्ग पर चलेंगे तब कुटुम्ब के लोग कहेंगे कि ये दोनों पागल हो गये हैं। यदि सारा कुटुम्ब भगवान के रास्ते आगे बढ़ेगा तो पास पड़ोस के लोग कहेंगे कि यह सारा कुटुम्ब पागल हो गया है। दूसरे का सुनकर अपना दिव्य मार्ग छोड़ना नहीं। अपने मार्ग पर आगे ही आगे बढ़ते जाओ। मार्ग के विघ्न धीरे-धीरे समाप्त हो जायेंगे। सारा विश्व संकल्पमय है। आप परमात्म-प्राप्ति का संकल्प दृढ़ रखें। संसार का सभी आपके अनुकूल होने लगेगा। जो लोग आपको रोकते थे वे ही आपकी प्रशंसा करेंगे। वे ही आपके पास से शुभेच्छा माँगेंगे।"

होली पर्व के विषय में पूज्य श्री आसारामजी बापू ने कहा :

"होली यह मात्र कंडे लकड़ी के ढेर को जलाने का त्यौहार नहीं है। यह तो साथ साथ चित्त की दुर्बलता दूर करने का, मन की मलीन वासनाओं को जलाने का पवित्र दिन है। आज के दिन से विलासी वासनाओं का त्याग करके परमात्म प्रेम, सद्भावना, सहानुभूति, इष्टनिष्ठा, निर्भयता, स्वधर्मपालन, करुणा, दया, अहिंसा आदि दैवी गुणों का अपने जीवन में विकास करना चाहिए। भक्त प्रहलाद जैसी दृढ़ ईश्वरनिष्ठा, सहनशीलता, प्रभुप्रेम, क्षमाशीलता, करुणा, दया, अहिंसा आदि दैवी गुणों का आह्वान करना चाहिये।"

पूज्य बापू ने कहा कि :

"होली का रंग तो कपड़ों को रंगता है। आप हरि के रंग से अपने हृदय को रंगना। होली का त्यौहार निसर्ग का त्यौहार है, वसन्त का उत्सव है। नये अन्न का उत्सव होली के साथ जुड़ा हुआ है। आज के दिन से खजूर का त्याग करना चाहिये। होली की परिक्रमा करने से कफ पिगलता है। हम निरोगी बनते हैं।

आज के दिन सत्य, शान्ति, परमेश्वरीय प्रेम, दृढ़ता की विजय होती है। हिरण्यकशिपु की आसुरी वृत्ति का पराभव, होलिका रूपी कपट के पराजय का दिन यह होली। जो भक्त परम पुरुष परमात्मा में दृढ़ निष्ठावान हैं; उनके आगे प्रकृति अपना नियम बदलती है। अग्नि उन्हें जला नहीं सकती। पानी उन्हें डुबा नहीं सकता। हिंसक पशु उनके मित्र बन जाते हैं। समस्त प्रकृति उनकी दासी बनती है, उनके अनुकूल बनती है। उनकी याददाश्त दिलानेवाला यह होली का पवित्र दिन है। मानव को विघ्न-बाधाओं के बीच भी प्रह्लाद की तरह भगवन्निष्ठा टिकाये रखकर संसार से पार होने का संदेश देनेवाला यह दिन है।

*

(पेज नं. २४ से जारी...)

मैं रात को देर से लौटकर आया तो भाई बोला : "अच्छा, अच्छा, शादी में नहीं गया तो कोई बात नहीं, मगर घर छोड़कर मत जाओ।"

अब तो हिंमत आ गई कि देखो, चार छः घंटे एकांत में गये तो सब ठीक हो गया। घर में थे तो रोक-टोक करते थे और भगवान के लिए जाकर सिर्फ बैठे ही रहे तो वे ही टोकनेवाले हाथा-जोड़ा कर रहे हैं। वाह प्रभु! वाह!"

**चार छः घंटे एकांत में गये तो सब टीक हो गया। घर में थे तो रोक-टोक करते थे और भगवान के लिए जाकर सिर्फ बैठे ही रहे तो वे ही टोकनेवाले हाथा-जोड़ा कर रहे हैं। वाह प्रभु! वाह!**

महसूस होता था कि ईश्वर के रास्ते चलने में बड़ा फायदा है। प्रथम, द्वितीय भूमिका प्राप्त हो गई तो ऐसा बल, साहस, निश्चितता आ जाती है। फिर दुनिया तो परछांई की नांई पीछे पीछे चलती है। इसलिए परमात्मा के रास्ते डग भरने के बाद पीछेहठ नहीं करनी चाहिए, नाहिंमत नहीं होना चाहिए।

*

# संतवाणी

मनुष्य यदि व्यर्थ के संकल्प-विकल्पों को कम कर दे तो अल्प काल में ही उसे अनुपम अनुभूति हो सकती है। यदि वह अपने संकल्प न बढ़ाये तो ईश्वर को अपना संकल्प पूरा करने में आसानी होगी। कोई अगर भगवान के संकल्प में अपने संकल्प को मिला देता है, इष्ट के संकल्प में अपने संकल्प को मिला देता है, तो इष्ट की या गुरु की अनुभूति उसकी अपनी अनुभूति हो जाती है।

प्रथम तो संकल्प करे नहीं, यदि करना ही है तो 'मुझे आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार हो जाए' ऐसा संकल्प करे। आत्म-साक्षात्कार का संकल्प जब दूसरे संकल्पों को मिटा देगा तब आत्म-साक्षात्कार का संकल्प भी अपने आप शांत हो जाएगा। परमात्मा अपने हृदय में प्रकट हो जायेगा।

आनंदमयी माँ के पास यह युक्ति थी। पहले ईश्वर उपासना, कुंडलिनी जागरण आदि सब किया; किन्तु बाद में जब निःसंकल्प अवस्था में पहुँची तो एकदम ऊँचाई पर आ गई। प्रधानमंत्री जैसे व्यक्ति का मार्गदर्शन भी वह बिल्कुल सहज में कर लेती थी। इन्दिराजी जब थकती थीं तो उनके चरणों में पहुँच जाती थीं। पंडित जवाहरलाल, कमला नेहरु और कई संत भी उनके संपर्क में रहते थे।

एकबार आनंदमयी माँ ने अपने शिष्यों से कहा :

"सामान बाँधो, चलो।" हरिद्वार आश्रम से स्टेशन पहुँचे।

शिष्य ने पूछा : "कहाँ की टिकट लायें?"

माँ : "कहीं की भी ले आओ।"

कैसी अद्भुत निःसंकल्प अवस्था!

प्रतिदिन प्रातः अपने आत्म-साक्षात्कार के संकल्प को दुहराना चाहिए। सूक्ष्म आत्म-निरीक्षण करना चाहिए कि जीवन में दुःख, अशांति और समस्याओं का क्या कारण है? सुबह नींद से उठो तो तुरन्त जगत की तरफ मत दौड़ो। दो मिनट शांत हो जाओ : 'मैं शांत आत्मा हूँ, चैतन्य आत्मा हूँ। वे सुंदर दिन कब आयेंगे जब मैं अपने आप में पूर्णरूप से स्थित होऊँगा? ॐ... ॐ... मैं निरोग हूँ। रोग मुझे नहीं लग सकता। रोग शरीर को आयेगा और जायेगा लेकिन मुझे कोई रोग छू नहीं सकता। मृत्यु मेरी कभी हो नहीं सकती क्योंकि मैं अमर आत्मा हूँ। चैतन्य हूँ। शांत हूँ। शुद्ध हूँ...'

यह तुम्हारा बाह्य जगत जो दिखता है, इसमें जो आश्चर्य और आकर्षण दिखते हैं, इससे भी अनंतगुना आकर्षक तुम्हारा आत्मिक साम्राज्य है। उसमें कोई उपाधि नहीं। इस बाह्य जगत में दुःख तो दुःख है किन्तु सुख भी दुःख-मिश्रित है। वहाँ सुख-दुःख कोई नहीं, सुख-दुःख की गंध भी नहीं। वहाँ तो बस परमानंद है, पूर्णता है। ऐसे पूर्ण जगत की ओर, पूर्ण स्वभाव की ओर प्रभातवेला में स्मृति हो जाए तो कितना अच्छा हो! 'मेरा आत्मा पूर्ण है। जन्म-पुण्य मेरे कर्म नहीं। मैं अज-निर्लेपी रूप आत्मा हूँ...।' एक दो मिनट इस प्रकार गहरी शांति में डूब जाओ।

मन कुछ कहेगा, बुद्धि कुछ कहेगी, इन्द्रियाँ विषयों की ओर खिंचेगी। बुद्धि परिणाम को सोचेगी पर मन लालच व आकर्षण में फँसेगा। उस समय अपनी बुद्धि को सहकार दो। अगर बुद्धि असहाय-सी जान पड़ रही हो तो तुरन्त उस जगह से उठकर दो-चार घूंट पानी पी लो, थोड़ा टहल लो। बुद्धि बढ़े ऐसी कोई किताब या ग्रंथ पढ़ो तो बुद्धि को बल मिल जायेगा। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मन कह रहा है, बुद्धि भी गवाही दे रही है लेकिन आपका हृदय नहीं मान रहा

**प्रथम तो संकल्प करे नहीं, यदि संकल्प करना ही है तो 'मुझे आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार हो जाए' ऐसा संकल्प करे। आत्म-साक्षात्कार का संकल्प जब दूसरे संकल्पों को मिटा देगा तब आत्म-साक्षात्कार का संकल्प भी अपने आप शांत हो जाएगा। परमात्मा अपने हृदय में प्रकट हो जायेगा।**

है तो वह काम मत करो। हृदय की बात मानो। उसमें सावधानी भी अवश्य बरतो क्योंकि हृदय में एक तो वासना के जोर से कोई बात आती है और दूसरी सच्चे हृदय से उठती है। तो सच्चे-झूठे की परख क्या? **'तस्मात् शास्त्रं प्रमाणम्।'** सच्चे हृदय की आवाज़ है कि मन का धोखा है इसको देखने के लिए बुद्धि का उपयोग करो। जो काम करने में शास्त्र सम्मत हो, गुरु प्रसन्न हों, परिणाम में पूर्णता मिले, सुख मिले वही काम करना, और परिणाम में जिससे दुःख, अशांति और बंधन बढ़े वह कार्य मन की वासनाओं से प्रेरित है। अतः सच्चे हृदय की प्रेरणा से जो काम करेंगे उसका फल सुख-शांति होगा।

यदि आपका कोई संकल्प फलीभूत हो गया तो उसको सदा के लिए पकड़े रहने से दुःख होता है। एक बार मान मिला, सुविधा मिली तो वैसे ही मिलती रहे, पत्नी या पति द्वारा रुचिकर अनुकूल कार्य हुए तो वैसे ही होते रहें... ऐसी पकड़ दुःख की जड़ है। पति-पत्नी, सास-ससुर या दामाद नहीं रुलाते, लेकिन तुम्हारा ही संकल्प तुम्हें रुलाता है। गुरु नहीं रुलाते, तुम्हारे संकल्पों की पकड़ ही दुःख देती है। अनुकूल संकल्प फलता है तो सुख की भ्रांति होती है। वास्तव में सच्चा सुख एक बार मिल जाये तो फिर आप दुःखी नहीं हो सकते। अमृत की पहचान क्या? मृतक भी जिससे जीवित हो जाय वह अमृत है। असली सुख किसे कहते हैं? जो दुःख को भी सुख में बदल दे। महावीर, बुद्ध, जड़भरत आदि को दुःख नहीं आये थे, ऐसी बात नहीं लेकिन दुःख उनके पास सुख हो गये। पैसा है, अच्छे संबंध हैं, सुख सुविधाएँ हैं, ठीक है। इनका उपयोग करो, इन में आसक्त मत हो। ईश्वर के साथ जो संबंध है, वह मजबूत होता रहे बस! बाकी के सब संबंध तो टूटेंगे, फूटेंगे, बनेंगे और बिगड़ेंगे।

संकल्प-पूर्ति और इच्छा-वासनाओं को पोसने की आदत पड़ गई है। जैसे अफीम का नशा छोड़ने से तंदुरुस्ती में लाभ होता है वैसे संकल्प-पूर्ति छोड़ देंगे तो आत्मशांति मिलेगी और जितनी आत्म-शांति रहेगी उतना सामर्थ्य बढ़ेगा। यदि सामर्थ्य और शांति में भी उलझे नहीं तो फिर परम-रस का प्राकट्य होगा। परम रस जीव को तो वांछनीय है ही, ईश्वर भी परम रस के पीछे-पीछे घूमता है। गोपियों की अपनी इच्छा नहीं रही, कृष्ण की इच्छा में अपनी इच्छा मिला दी। पतिव्रता स्त्री पति की इच्छा में अपनी इच्छा मिला देती है। सत्शिष्य सत्गुरु की इच्छा में अपनी इच्छा मिला देता है। इससे परम लाभ बड़ी सरलता से हो जाता है। शंकराचार्य को तो कठिन साधना करनी पड़ी। केरल से पैदल चले। ओमकारेश्वर आये। हठयोग, राजयोग, ज्ञानयोग किया। किन्तु तोटकाचार्य ने तो केवल शंकराचार्य की इच्छा में अपनी इच्छा मिला दी और सेवा की तो उनको वही मिल गया जो शंकराचार्यजी को मिला था।

अपना संकल्प जितना हो सके उतना कम करें। 'तेरी मरजी पूर्ण हो... ईश्वर की इच्छा पूरी हो...।' इससे सामर्थ्य आयेगा और जो होना चाहिये वह स्वतः हो जायेगा। जो अनावश्यक, हानिप्रद है वह रुक जायेगा। आपके शरीर, चित्त, मन और आचरण द्वारा जो होना चाहिये वह होने लगेगा और नहीं होना चाहिये वह नहीं होगा। लावारिस माल सरकार का होता है ऐसे ही अहंकार-शून्य चित्त परमात्मा का होता है। उसके द्वारा परमात्मा कार्य करते हैं। उस अन्तःकरण से फिर परमात्मा ही लीला करते हैं और लोग उनको संत मानते हैं, भगवान मानते हैं, गुरु मानते हैं और पूजते हैं।

ऐसा प्रयत्न करानेवाले आत्मवेत्ता-ब्रह्मज्ञानी पुरुषों को हज़ार-हज़ार प्रणाम हो! फिर चाहे वे महर्षि वशिष्ट हों या भगवान वेदव्यास हों, अवधूत दत्तात्रेय हों अथवा एकनाथजी महाराज हों, एकांत में आत्मानंद लेनेवाले श्री नारायण बापू हों या घाटवाले बाबा हों, जोगी गोरखनाथ हों या योगिनी स्वयंप्रभा हों, महारानी मदालसा हों या विदुषी गार्गी हों, सती अनसूया हों या सती सावित्री हों, कुमारी सुलभा हों या संत कबीर हों, रमण महर्षि हों या रामकृष्ण हों, स्वामी केशवानंद हों या उनके प्यारे सांई लीलाशाह हों, नामी-अनामी प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध सब आत्मवेत्ता महापुरुषों को पुनः पुनः प्रणाम हो।

ॐ शांतिः! ॐ आनंद! पूर्ण शांतिः आत्मानंद!!

*

# प्रतीक्षा नहीं... समीक्षा करो

आपके जीवन में जब कुछ खट्टे-मीठे अनुभव आयें तब समीक्षा कीजिए कि ये कटु अनुभव दीख रहे हैं; लेकिन उनके पीछे परमात्मा की कितनी कृपा है, करुणा है? उस समय शायद पता न चले। आप फरियाद की खाई में और दुःख बढ़ा लेंगे। समीक्षा के अभाव में आप ईश्वर को, भाग्य को, समाज को, अपने पुण्यों को और कर्मों को कोसने लगेंगे। उससे आपकी शक्ति क्षीण होगी। परंतु समीक्षा करने पर आप बिना धन्यवाद के रह नहीं सकते।

भगवान बुद्ध की एक भिक्षुणी शिष्या थी। उसका नाम था पटाचारा। त्रिपिटक ग्रंथ में उसकी कथा आती है। पटाचारा कुँआरी थी। किसी युवान से उसका मन लग गया । माँ-बाप के न चाहने पर भी उसने उसके साथ शादी कर ली। श्रावस्ती नगरी से बहुत दूर देश में वह अपने पति के साथ रहने लगी। कालचक्र घुमता गया। वह दो बच्चों की माता हुई। काफी वर्ष गुजरने पर पटाचारा के मन में हुआ कि कुछ भी हो, आखिर माँ-बाप बूढ़े हो गये होंगे, अब मैं अपने परिवार के जनों से मिलूँ। उन माँ-बाप को रिझा लूँ... मना लूँ।

पटाचारा अपने पति और दो बेटों के साथ चली श्रावस्ती नगरी की ओर। आज से २५०० साल पहले की बात है। गाड़ी मोटरों की सुविधा न थी। लोग पैदल चलते थे। यात्रा करते करते ये लोग घने जंगल से गुजर रहे थे। रात्रि में पति ने शयन किया और साँप ने उसे काटा। पति मर गया। पटाचारा के सिर पर मानो एक दुःख का पहाड़ गिर पड़ा। इतना ही नहीं, रात्रि को तो पति की मृत्यु देख रही है और प्रभात में पुत्र को किसी हिंसक प्राणी ने झपट लिया। वह मौत के घाट उतर गया। अब वह एकलौते बेटे को देख कर मुश्किल से संभल रही है। प्यास के मारे दूसरा बेटा पानी खोजने गया। वह झाड़ियों में उलझ गया और खप गया। अब अकेली नारी पटाचारा अपनेको जैसे तैसे संभालती हुई, रास्ता काटती हुई, कंकड़ों पत्थरों पर पैर जमाती हुई, दिल को थामती हुई, मन को समझाती हुई माँ-बाप के दीदार के लिए भागी जा रही है। वह अबला श्रावस्ती नगरी में पहुँचती है तो खबर सुनती है कि जोरों की आँधी चली उसमें उसका मकान गिर गया और बूढ़े माँ-बाप उसके नीचे दबकर मर गये। पटाचारा के पैरों तले से मानो धरती खिसक रही है। है तो बड़ी दुःखद घटना मगर ईश्वर न जाने इस दुःख के पीछे कितना सुख देना चाहता है यह पटाचारा को पता न था।

**पति ने शयन किया और साँप ने उसे काटा। पति मर गया। प्रभात में पुत्र को किसी हिंसक प्राणी ने झपट लिया। वह मौत के घाट उतर गया। प्यास के मारे दूसरा बेटा पानी खोजने गया। वह झाड़ियों में उलझ गया और खप गया।**

संसार का मोह छुड़ाकर शाश्वत की ओर ले जानेवाली ईश्वर-कृपा न जाने किस व्यक्ति को किस ढंग की व्यवस्था करके उसे उन्नत करना चाहती है!

पटाचारा के मन में हुआ कि : 'आखिर यह क्या? जिस पति के लिये माँ-बाप छोड़े उस पति को साँप ने डंस मारा, वह चल बसा। बेटों को सम्भाला, पाला-पोसा, बड़े होंगे तो सुख देंगे यह अरमान किये। एक बेटे को हिंसक पशु उठाकर ले गया। दूसरा बेटा गायब हो गया। इतना सब दुःख सहते सहते माँ-बाप के लिए आयी, हवा के झोंके ने मकान गिरा दिया और वे माँ-बाप दब मरे। क्या यही है जीवन? क्या यही है हमारे मानव जन्म की उपलब्धि? हम दुःख में भी परेशान हैं, हम जन्म में भी परेशान हैं, जवानी और बुढ़ापे में भी परेशान हैं और मौत में भी परेशान हैं। क्योंकि परम की कृपा नहीं दीख रही।'

हमारा परमात्मा कोई कंगाल नहीं कि हमें एक ही अवस्था में, एक ही शरीर में, एक ही परिस्थिति में रख दे। उसके पास चौरासी चौरासी लाख कपड़े हैं अपने बच्चों के लिए और करोड़ों करोड़ों अवस्थाएँ हैं। वह हर अवस्था से पार कराता कराता आखिर जीवात्मा को अपने परमात्म-

स्वभाव में जगाता है।

ईश्वरकृपा बरस रही है। हम समीक्षा नहीं करते। प्रतीक्षा उसकी होती है जो अप्राप्त हो और समीक्षा प्राप्त वस्तु की की जाती है। हर अवस्था में उसकी कृपा निहारने से, कृपा की समीक्षा करने से शांति स्वाभाविक आयेगी। ॐ शांति... शांति... शांति...

**ईश्वर न जाने इस दुःख के पीछे कितना सुख देना चाहता है यह पटाचारा को पता न था। संसार का मोह छुड़ाकर शाश्वत की ओर ले जानेवाली ईश्वर-कृपा न जाने किस व्यक्ति को किस ढंग की व्यवस्था करके उसे उन्नत करना चाहती है!**

मीरा और राबिया के जीवन में भी हजार हजार विपत्तियाँ आयीं फिर भी उन्होंने ईश्वर की कृपा का ही अनुभव किया। ईश्वर की कृपा का अनुभव करनेवाले अपने हृदय को हमेशा धन्यवाद, भगवद् भक्ति से भरपूर रखते हैं। दोषदर्शन और फरियादी स्वभाव जीवन को नष्ट करता है।

ग्वाल मित्रों ने श्रीकृष्ण से कहा : "गली में कुत्ता मरा पड़ा है, पूँछ कटी है, चाँदे पड़े हैं, मक्खियाँ भिनभिना रही हैं, क्या यह इसके पापों का फल नहीं है?" तब श्रीकृष्ण ने शुभदृष्टि विकसित करते हुए ग्वाल गोपों से कहा : "इतना होते हुए भी इस कुत्ते के दाँत चमक रहे हैं, यह इसके पुण्यों का फल नहीं दिख रहा है?"

**मीरा और राबिया के जीवन में भी हजार हजार विपत्तियाँ आयीं फिर भी उन्होंने ईश्वर की कृपा का ही अनुभव किया। ईश्वर की कृपा का अनुभव करनेवाले अपने हृदय को हमेशा धन्यवाद, भगवद्-भक्ति से भरपूर रखते हैं। दोषदर्शन और फरियादी स्वभाव जीवन को नष्ट करता है।**

नरसिंह मेहता की पत्नी की मृत्यु हो गई और वे गाते हैं :

**'भलुं थयुं भांगी जंजाल,**
**सुखे भजीशुं श्रीगोपाल।'**

'अच्छा हुआ, जंजाल, छूट गया। अब सुख से श्रीगोपाल का भजन करेंगे।' पुत्र शामलशाह की मृत्यु हुई तब वे कहते हैं :

**जे गम्युं जगत गुरु देव जगदीश ने,**
**ते तणो खरखरो फोक करवो।**
**आपणो चिंतव्यो अर्थ कंई नव सरे,**
**उदरे व्यर्थ उद्वेग धरवो॥**

'जगत में जिससे स्नेह था, उसे गुरुदेव जगदीश ने ले लिया। अब मेरी चिन्ता का कोई विषय नहीं रह गया। अंतर में क्यों उद्वेग धारण करना?'

तुकारामजी की पत्नी बड़ी उग्र स्वभाव वाली और कर्कशा थी। इसके लिए तुकारामजी भगवान का आभार मानते और कहते कि पत्नी के प्रतिकूल होने से उसके जाल में न फँसकर मैं सुगमतापूर्वक परमात्मा को प्राप्त कर सका। एकनाथजी की पत्नी अनुकूल स्वभाव की थी तो उन्होंने प्रभु का आभार इस रूप में माना कि उनकी पत्नी उनके साधन-मार्ग में सहायक बनी। इस प्रकार नरसिंह मेहता ने पत्नी की मृत्यु में, तुकाराम ने प्रतिकूल पत्नी की प्राप्ति में एवं एकनाथजी ने अनुकूल पत्नी की प्राप्ति में परमात्मा के अनुग्रह का ही दर्शन किया। अतः हे मानव! तू भगवत्कृपा की समीक्षा कर।

कैदी को सजा मिलती है यह भी ईश्वरकृपा है। उससे उसके कर्म कटते हैं और अंतर्मन स्वच्छ होता है। नागरिक को ईनाम मिलता है उसमें भी भगवत्कृपा है। अतः रोग, हानि या और किसी कष्ट के समय भगवत्कृपा का दर्शन कीजिए। भविष्य उज्ज्वल होगा। दुःख, दर्द, मुसीबत में दोषनिवृत्त करने के लिए, अहंकार विलय कराने के लिए भगवत्कृपा काम करती है। सुख-सुविधा और सफलताओं में आसक्ति एवं दुःख और निष्फलताओं में निराशा और विषाद दूर करके जीव को जगानेवाले महापुरुषों की तरफ भगवत्कृपा प्रेरित करती

(अनु. पेज ६ पर)

# त्रिकाल-सन्ध्या

भगवान राम सन्ध्या करते थे, भगवान श्रीकृष्ण सन्ध्या करते थे, भगवान राम के गुरुदेव वशिष्ठजी भी सन्ध्या करते थे। मुसलमान लोग नमाज पढ़ने में इतना विश्वास रखते हैं कि वे चालू आफीस से भी समय निकालकर नमाज पढ़ने चले जाते हैं, जबकि हम लोग आज पश्चिम की मैली संस्कृति तथा नश्वर संसार की नश्वर वस्तुओं को प्राप्त करने की होड़-दौड़ में सन्ध्या करना बन्द कर चुके हैं या भूल चुके हैं। शायद ही एक-दो प्रतिशत लोग कभी नियमित रूप से सन्ध्या करते होंगे।

एक ही धातु से दो शब्दों की उत्पत्ति हुई है - ध्यान और सन्ध्या। मूल रूप से दोनों का एक ही लक्ष्य है। ध्यान करने से चित्त शुद्ध होता है, सन्ध्या करने से मन निर्मल होता है। सन्ध्या में आचमन, प्राणायाम, अंग-प्रक्षालन तथा बाह्याभ्यांतर शुचि की भावना करने का विधान होता है। प्राणायाम के बाद भगवन्नाम जप व भगवान का ध्यान करना होता है। इससे शरीर शुद्ध, मन प्रसन्न व बुद्धि तेजस्वी होती है तथा भगवान का ध्यान करने से चित्त चैतन्यमय होता है।

प्रातःकाल में सूर्योदय के पूर्व ही सन्ध्या आरंभ कर लेनी चाहिये, मध्यान्ह में दोपहर १२ बजे के आसपास व शाम को सूर्यास्त के पूर्व सन्ध्या में संलग्न हो जाना चाहिये।

## त्रिकाल सन्ध्या से लाभ

(१) त्रिकाल सन्ध्या करनेवाले व्यक्ति की कभी अपमृत्यु नहीं होती।

(२) त्रिकाल सन्ध्या करनेवाले ब्राह्मण को किसीके सामने हाथ फैलाने का दिन कभी नहीं आता है। शास्त्रों के अनुसार उसे रोजी-रोटी की चिन्ता सताती नहीं है।

(३) त्रिकाल सन्ध्या करनेवाले व्यक्ति का चित्त शीघ्र निर्दोष हो जाता है, पवित्र हो जाता है, उसका तन तन्दुरुस्त रहता है, मन प्रसन्न रहता है तथा उसमें मन्द और तीव्र प्रारब्ध को परिवर्तित करने का सामर्थ्य आ जाता है। वह तरतीव्र प्रारब्ध का उपभोग करता है। उसको दुःख, शोक, हाय-हाय या चिन्ता कभी अधिक नहीं दबा सकती।

(४) त्रिकाल सन्ध्या करनेवाली पुण्यशील बहनें और पुण्यात्मा भाई अपने कुटुम्बी और बाल-बच्चों को भी तेजस्विता प्रदान कर सकते हैं।

(५) त्रिकाल सन्ध्या करनेवाले माता-पिता के बालक दूसरे साधारण बालकों की अपेक्षा कुछ विशेष योग्यता वाले हो सकते हैं।

(६) त्रिकाल सन्ध्या करने वाले का चित्त आसक्तियों में इतना अधिक नहीं डूबता। त्रिकाल सन्ध्या करने वाले का मन पापों की ओर उन्मुख नहीं होता।

(७) त्रिकाल सन्ध्या करने वाले व्यक्ति में ईश्वर-प्रसाद पचाने का सामर्थ्य आ जाता है।

(८) शरीर की स्वस्थता, मन की पवित्रता और अन्तःकरण की शुद्धि भी सन्ध्या से प्राप्त होती है।

(९) त्रिकाल सन्ध्या करने वाले भाग्यशालियों के संसार-बंधन ढीले पड़ने लगते हैं।

(१०) त्रिकाल सन्ध्या करनेवाली पुण्यात्माओं के पुण्य-पुंज बढ़ते ही जाते हैं।

(११) त्रिकाल सन्ध्या करने वाले के दिल और फेफड़े स्वच्छ और शुद्ध होने लगते हैं। उसके दिल में हरिगान अनन्य भाव से प्रकट होता है तथा जिसके दिल में अनन्य भाव से हरितत्त्व स्फुरित होता है, वह वास्तव में सुलभता से अपने परमेश्वर को, सोऽहम् स्वभाव को, अपने आत्म-परमात्म-रस को यहीं अनुभव कर लेता है।

ऐसे महाभाग्यशाली

**मुसलमान लोग नमाज पढ़ने में इतना विश्वास रखते हैं कि वे चालू आफीस से भी समय निकालकर नमाज पढ़ने चले जाते हैं, जबकि हम लोग आज पश्चिम की मैली संस्कृति तथा नश्वर संसार की नश्वर वस्तुओं को प्राप्त करने की होड़-दौड़ में सन्ध्या करना बन्द कर चुके हैं या भूल चुके हैं।**

साधक-साधिकाओं के प्राण लोक-लोकांतर में भटकने नहीं जाते। उनके प्राण तो प्राणेश्वर में मिलकर जीवन्मुक्त दशा का अनुभव करते हैं। जैसे आकाश सर्वत्र है वैसे ही उनका चित्त भी सर्वव्यापी होने लगता है।

**जिस प्रकार आकाश जीवों के लिये सुलभ है, जिस प्रकार पापी के लिये दुःख और अशांति सुलभ है, धनाढ्य के लिये संसारी वस्तुएँ सुलभ हैं, उसी प्रकार अनन्य भाव से भगवान को भजने वालों के लिये भगवान सुलभ हैं।**

(१२) जैसे ज्ञानी का चित्त आकाशवत् व्यापक होता है वैसे ही उत्तम प्रकार से त्रिकाल सन्ध्या और आत्मज्ञान का विचार करने वाले साधक का चित्त विशाल होते-होते चिदाकाशमय होने लगता है।

(१३) जैसे पापी मनुष्य को सर्वत्र अशांति और दुःख ही मिलता है वैसे ही त्रिकाल सन्ध्या करनेवाले साधक को सर्वत्र शांति, प्रसन्नता, प्रेम तथा आनन्द मिलता है।

(१४) जैसे सूर्य को रात्रि की मुलाकात नहीं होती वैसे ही त्रिकाल सन्ध्या करनेवाले को दुश्चरित्रता की मुलाकात कभी नहीं होती।

(१५) जैसे गारुड़ी मंत्र से सर्प भाग जाता है, वैसे ही गुरुमंत्र से पाप भाग जाते हैं और त्रिकाल सन्ध्या करनेवाले शिष्य के जन्म-जन्मांतर के कल्मश, पाप, ताप जलकर भस्म हो जाते हैं।

हाथ में जल रखकर सूर्य नारायण को अर्घ्य देने से भी अच्छा साधन आज के युग में मानसिक सन्ध्या करना होता है, इसलिए जहाँ भी रहें, तीनों समय थोड़े से जल के आचमन से, त्रिबन्ध प्राणायाम के माध्यम से सन्ध्या आरम्भ कर देना चाहिये तथा प्राणायाम के दौरान अपने इष्ट मन्त्र का जाप करना चाहिये।

भगवान सदाशिव पार्वती से कहते हैं, श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं : ध्यान में अनन्य भाव से भगवान का चिन्तन करनेवाला भगवान को सुलभता से प्राप्त करता है, उसके लिये भगवान सुलभ हो जाते हैं।

**नास्ति ध्यानसमं तीर्थम्।**

ध्यान के समान कोई तीर्थ नहीं।

**नास्ति ध्यानसमं यज्ञम्।**

ध्यान के समान कोई यज्ञ नहीं।

**नास्ति ध्यानसमं स्नानम्।**

ध्यान के समान कोई स्नान नहीं।

जिस प्रकार आकाश जीवों के लिये सुलभ है, जिस प्रकार पापी के लिये दुःख और अशांति सुलभ है, धनाढ्य के लिये संसारी वस्तुएँ सुलभ हैं, उसी प्रकार अनन्य भाव से भगवान को भजने वालों के लिये भगवान सुलभ हैं। सर्वव्यापक चैतन्य के दर्शन करने का उसका सौभाग्य शीघ्र पूर्ण होने लगता है।

**तस्याहं सुलभः पार्थ....।**

हकीकत तो यह है कि भगवान और अपने बीच में तनिक भी दूरी नहीं है। संसार और शरीर नश्वर हैं, कायम रह नहीं सकते; लेकिन आत्मा और परमात्मा किसीसे दूर नहीं होते। जैसे घड़े का आकाश महाकाश से दूर नहीं होता। अथवा यूँ कहिये कि तरंग और पानी कभी अलग नहीं होते उसी प्रकार जीवात्मा और परमात्मा कभी अँलग नहीं होते। अन्य-अन्य में आसक्ति के कारण जो दूरी की भ्रांति सिद्ध हुई है यह भ्रांति हटाने के लिए भगवान कहते हैं : "हे अर्जुन! जो मेरे स्वरूप का चिन्तन करता है, अपने आत्मस्वरूप को खोजता है उसके लिये मैं सुलभ हो जाता हूँ।"

*

**महापुरुषों की, सद्गुरुओं की शरण मिलना दुर्लभ है। महापुरुष एवं सद्गुरु मिलने पर उन्हें पहचानना कठिन है। हमारी तुच्छ बुद्धि उन्हें पहचान न पाय फिर भी उनकी निन्दा, अपमान आदि भूलकर भी न करो। शुकदेवजी ने राजा परीक्षित को बताया था कि जो लोग महापुरुषों का अनादर, अपमान, निन्दा करते हैं उनका वह कुकर्म उनकी आयु, लक्ष्मी, यश, धर्म, लोक-परलोक, विषय-भोग और कल्याण के तमाम साधनों को नष्ट कर देता है। निन्दा तो किसीकी भी न करो और महापुरुषों की निन्दा, अपमान तो हरगिज़ नहीं करो।**

# तत्त्वदर्शन में ही परम कल्याण

बुद्ध को देखकर एक युवक उन पर विमोहित हो गया। बुद्ध को देखते उसे बड़ा मजा आता था। श्रावस्ती नगरी का वह युवान बुद्ध के पीछे कई बार दर्शन करने को चल पड़ता बुद्ध के विहार तक। उसका नाम था बकबलि।

बकबलि ने सोचा कि हररोज घर से आता हूँ, बुद्ध के दर्शन तो होते हैं, मगर घरवाले रोकटोक करते हैं, इसलिए सदा दर्शन नहीं कर पा रहा हूँ। जब नित्य दर्शन ही करने हैं तो बुद्ध के संघ में सदा के लिए भिक्षुक बन जाऊँ तब काम चलेगा।

बकबलि ने बुद्ध के संघ में भिक्षुक होना स्वीकार कर लिया। वह भिक्षुक बन गया। अब तो वह संघ में ही रहने लगा। उसे रोज बुद्ध के दर्शन करने को मिलते थे।

बुद्ध जानते थे कि यह मेरे शरीर का दर्शन करके धीरे-धीरे मोहित हो रहा है। मगर यह अभी कच्चा है, नया है। कुछ समय बीतने दो, जरा दूसरों के दर्शन से बचने के लिए मेरे दर्शन में लगने दो। फिर मेरे इस शरीर के पार जो मैं हूँ उसके दर्शन करेगा तब यह पूर्ण होगा। यह जवान है और इधर-उधर के विकारी खड्डों में गिरानेवाले दर्शन या मुलाकात की अपेक्षा अभी तो उसे मेरे शरीर के दर्शन होने दो।

कुछ समय बीता। महीने बीते, वर्ष बीते। बुद्ध ने देखा कि उसका बाह्य दर्शन का आकर्षण हट गया, अब इस शरीर में तो नहीं, लेकिन प्रियतम प्रकट हुआ है उसके दर्शन में वह रुक गया हैं। वहाँ से उसे हटाना चाहिए। अब उसे मेरे दर्शन करा दूँ। मैं जिस घर में अभिव्यक्त हुआ हूँ, वह घर सदा नहीं रहेगा। परंतु मैं कभी मिटूँगा नहीं। मेरे उस शाश्वत स्वरूप का दर्शन इसको करा दूँ।

बुद्ध ने बकबलि को बुलाकर कहा : "देख बकबलि ! तू मुझ पर मोहित हो गया है। मेरे दर्शन के बिना तुझे चैन नहीं पड़ता, मगर तुझे रोना पड़ेगा।"

"भगवन् ! ऐसा क्यों। आपके दर्शन ने तो मुझे संयमी बना दिया। आपके दर्शन ने तो मुझे भिक्षुक बना दिया। आपके दर्शन ने तो मुझे इस विकारी युवावस्था से निर्विकारी साधना के रास्ते लगा दिया। यह आप क्या कह रहे हैं भन्ते !"

"नहीं बकबलि ! जब यह शरीर नहीं रहेगा तब तेरा हाल क्या होगा ?"

"भगवन् ! ऐसी बात न करें। हम पहले मर जायेंगे। मगर आप के दर्शन......"

बुद्ध ने देखा, इसका मोह तोड़ने के लिए उपदेश असर नहीं कर रहा है। मेरे सत्संग का असर नहीं हो रहा है। यह मुझे बाहर देखता है, मुझे भीतर नहीं देखता है। जब तक मेरे भीतर का ज्ञान इसे नहीं होगा तब तक यह पूरा सनाथ नहीं होगा। अभी अर्ध सनाथ होगा तो मेरा सहारा छूटते ही न जाने किसके संपर्क में आ जाये, कैसे गिर जाय, कोई पता नहीं।

देखो, उन महापुरुषों की कितनी गहरी समझ होती है ! वे कैसे परम हितैषी होते हैं, नहीं तो जो अपने को देखकर भावविभोर होकर सब न्यौच्छावर कर रहा है ऐसे आदमी को फिर स्वार्थी आदमी थोड़े ही ऐसा उपदेश करेगा कि मेरा यह शरीर नश्वर है ? महापुरुष इसलिए आदरणीय हैं, पूजनीय हैं, वंदनीय हैं कि वे परम हितैषी हैं। उनके चित्त में पूर्ण निःस्वार्थ है। उनके मन में यही भावना होती है कि यह जीव कब अपनी महिमा में जगेगा। जैसे एक शराबी दूसरे व्यक्ति को शराबी बनाकर आनंदित होता है, एक जुआरी दूसरे को जुआरी बना देता है, ऐसे ही महापुरुष दूसरे को महापुरुष बना देखकर प्रसन्न होते हैं। गुरु शिष्य का नाता बड़ा पवित्र है। सेठ नौकर को प्यार करता है तो काम लेने के लिए और नौकर सेठ को चाहता है

**बकबलि की आँखें खुली। उसने भगवान बुद्ध के तात्त्विक उपदेशों को बड़े आदर से, बड़ी तत्परता से सुना और वह बुद्धत्व की ओर चल पड़ा।**

तो रुपया लेने के लिए। इस जमाने की विलासी पत्नी अगर पति को प्यार करती है तो रात को कमर तोड़ेगी और पति पत्नी को प्यार करता है तो नौंच लेगा। मगर गुरु शिष्य को प्यार करते हैं तो उसकी कमर मजबूत कर देंगे, उसका मन मजबूत कर देंगे, उसका जीवन मजबूत कर देंगे। जिसके आगे मौत भी घुटने टेकने लग जाय ऐसे पद में खड़ा करने के लिए बुद्ध अपने शिष्य बकबलि से कह रहे है : "तू मेरे उपदेशों को सुन।"

बकबलि कहता है : "हमें तो साक्षात् भगवान के दर्शन हो रहे हैं, अब उपदेशों को क्या करना है?"

बुद्ध ने कहा : "बकबलि! मेरा शरीर नहीं रहेगा तब तू लाचार हो जायेगा।"

"ऐसा न कहो भन्ते!"

"मेरे उपदेशों को सुन। मैं जो हूँ वह मुझे अपने दिल में देख ले।"

बकबलि को कोई असर नहीं हुआ। बुद्ध ने समय का थोड़ा इंतजार किया। कुछ समय बीता। किसी राजा का आमंत्रण आया चातुर्मास करने के लिए। बुद्ध ने जान-बुझकर वह आमंत्रण स्वीकार कर लिया।

बकबलि ने कहा : "आप जब वहाँ पधारेंगे तो मैं तो नित्य आप का दर्शन करके ही भोजन करता हूँ और दिन में भी कई बार आपका दर्शन करता हूँ। अब मेरा क्या होगा? मैं आप के साथ चलूँगा।"

बुद्ध ने कहा : "देख बकबलि! मुझे अकेला ही जाना है। गुरु की आज्ञा को काटना शिष्य का कर्त्तव्य नहीं, शिष्य की शोभा नहीं। मैं अकेला ही जाऊँगा।"

तब तो वह फूट-फूटकर रोने लगा। तब बुद्ध बोले : "बकबलि! मैं तुझे पहले ही कह रहा था। यह तो अभी मैं तीन महीने के लिए जा रहा हूँ। जब सदा सदा के लिए मेरा शरीर चला जायेगा तब तेरा हाल क्या होगा?"

अब बकबलि की आँखें खुली। उसने भगवान बुद्ध के तात्त्विक उपदेशों को बड़े आदर से, बड़ी तत्परता से सुना और वह बुद्धत्व की ओर चल पड़ा।

*

---

(पेज नं. २८ से जारी...)

तथा गर्भवती बहनों के लिए हितावह है। इससे गोल, उदरकृमि भी नष्ट होते हैं।

आम की गुठली दही में पीस कर देने से पेचिश का रोग नष्ट होता है।

आम की गुठली का चूर्ण शहद में देने से बवासीर तथा स्त्रियों का रक्तप्रदर मिटता है।

प्रिय साधकों! आम का भिन्न-भिन्न ढंग से उपयोग आप जान गये। भोजन और औषधि में दिव्यता लाने के लिए परमेश्वर का चिन्तन, गुरुमंत्र का जप करके खुराक तथा औषधि लेने वाला साधक लाभ प्राप्त करता है। क्यों, बराबर है न? जयरामजी बोलना पड़ेगा।

आम सब फलों का राजा है। मनुष्य शरीर सब योनियों का राजा है। तेरा मन शरीर का राजा है और तू मन का राजा है। हे राजाओं के राजा! तू अपने आत्मराज्य में खूँटा गाड़। आम के भिन्न-भिन्न उपयोगों से तेरा शरीर स्वस्थ रहे; यह तो हम चाहते हैं; साथ में यह भी अवश्य चाहते हैं कि तू राजाओं का राजा अपनी महिमा में अवश्य जाग। देह को मैं मानने की गलती में कभी न लग। नित्य मुक्त शुद्धबुद्ध अपने आनंद स्वरूप में मस्त रह। हटा दो निंदा नफरत को, बढ़ाओ स्वास्थ्य और सहजता को... प्रेम और पवित्रता को। क्यों ठीक है न?

*

## 'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों से निवेदन

**इस अंक के साथ ही आपका १९९१-९२ का सदस्य शुल्क पूर्ण हो रहा है। आगामी १९९२-९३ वर्ष के अंक प्राप्त करने हेतु आपकी सदस्यता सेवाधारी एजेन्ट भाई द्वारा अथवा म. ओ. द्वारा रीन्यू करवा लें।**

# पूज्यश्री का सत्संग : शराब-मुक्ति का रामबाण इलाज

प॰ पूज्य स्वामी श्री आसाराम जी बापू
साबरमति आश्रम, अहमदाबाद।

श्रेद्वय,

स्वामी जी चरण स्पर्श,

भिवानी में आपके सतसंग में एक पत्रकार के रूप में गया था । और वहां आपकी अमृतवाणी से मैं प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका और सतसंग समापन तक अविलम्ब जाता रहा । वह मेरे जीवन के महत्वपूर्ण क्षण थे । आपके ज्ञान ने मेरे अन्दर के छुपे हुए उस व्यक्ति को झिझोंड़ कर रख दिया जो ढलते ही मुझे शराब पीने के लिए विवश कर देता था । दिन भर तम्बाकू के पान लेने के लियेविवश था । विचार भी स्थिर नहीं थे । मगर आपका ज्ञान मेरे लिए रामबाण सिद्ध हुआ है शराब, और पान छोड़ दिये हैं । आप द्वारा लिखित साहित्य को पढता हूँ । विचारों में भी स्थिरता आ गई है । पत्र विलम्ब से लिखने का कारण भी यही है कि मैं स्वंय की परीक्षा कर रहा था और इतने लम्बे समय में इन बुरी आदतों ने मुझे विवश नहीं किया है । 5 अप्रेल को मैं आपके दर्शनों के लिए आश्रम में आ रहा हूँ । यहां के प्रसिद्ध उधोग पति श्री के.के. मेहता जी भी आपके ज्ञान से प्रभावित हो हैं और लगतार सतसंग में आते रहे । श्री मोहता जी भी जिज्ञासु हैं आप जैसे संत ही हिन्दू धर्म की नींव मजबूत कर सकते हैं और आज की नई पीढ़ी जो धर्म से दूर होती जा रही है उनमें ज्ञान की चेतना जगा सकते हैं । क्योंकि जिस प्रकार मेरी आत्मा जागृत हुई है इसी प्रकार हजारों लाखों को आपकी अमृतवाणी ने अज्ञानता के विष से दूर किया होगा

आपका
[signature]
। महादेव प्रसाद शर्मा ।
पत्रकार

दिनांक 23-3-92

बादल सदन, नजदीक रेलवे स्टेशन,
भिवानी, हरियाणा ।

# ' साधक ऐसा चाहिए.... '

**- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू**

ज्ञान की सात भूमिकाएँ हैं : शुभेच्छा, सुविचारणा, तनुमानसा, सत्त्वापत्ति, असंसक्ति, पदार्थाभाविनी और तुर्यगा ।

अगर घर में, चालू व्यवहार में, समाज में रहते हुए भी पहली, दूसरी भूमिका प्राप्त हो जाय तो फिर उस साधक को लोग दबा नहीं सकते, साधना-मार्ग से डिगा नहीं सकते। मुझे परमार्थमार्ग से रोकनेवालों ने बहुत रोका, खुद को समझदार माननेवाले नासमझों ने मुझे बहुत समझाया, ससार की जिम्मेदारियाँ संभालने के लिए।

मैं सोचता : ये लोग इतना समझा रहे हैं, फुसला रहे हैं। चलो, एकबार देखते हैं। उनकी बात आजमाने के लिए किसी बड़े सेठ की दुकान के बाहर खड़े हो जाता। एक तेल की बड़ी दुकान थी। उसके बाहर खड़ा देखता रहा। इतना बड़ा धंधा, इतने सारे नौकर, इतने पैसे, आखिर उस सेठ को मिलता क्या है, इन सबसे ? मैं क्या देखता हूँ कि उसके चेहरे पर कोई रौनक नहीं, शांति की झलक नहीं, सारा ही चेहरा तनाव, चिंता, जिम्मेदारियों में जकड़ा हुआ है।

एक बार तो मैं शेरबाजार में चला गया। सोचा : समझो कि बड़े सेठ हो गये। शेरों का धंधा करेंगे तो बहुत बहुत तो यहाँ पहुँचेंगे। मगर शेरबाजारवालों को देखकर मुझे ग्लानि होती थी। परंतु जब किसी संत को देखता था तो मेरा स्वाभाविक आकर्षण उनके प्रति हो जाता था।

ध्यान-भजन-साधन का नियम मैंने पक्का कर लिया था। कुछ भी हो जाय अमुक माला तो करनी ही है। शाम को पांच बज जाते तो दुकान से उठकर चल देता। जब रोज का नियम हो गया तो भाई नाराज रहने लगा। वह बोलता : "यार ! सुधरो, कुछ कहा मानो, धंधे में ध्यान दो।" मगर मैंने कहा कि : "हम तो बिगड़ ही गये।" वह बातों में लगाकर, युक्ति-प्रयुक्ति करके मुझे रोक भी लेता था तो फिर मैं छुड़वाकर चला जाता, दौड़-दौड़ कर बस पकड़ता। कभी बस फुल हो जाती, चल देती, मैं चूक जाता तो उसके पीछे दौड़ता। एक स्टेन्ड पर नहीं बिठाती तो मैं दौड़कर दूसरे स्टेन्ड पर पहुँच जाता। सत्संग में पहुँचने का ऐसा भाव रहता था । बस कालुपुर से लालदरवाजा जाती थी, सीटी में से गुजरती तो इतना तेज नहीं चल सकती। भीड़ की वजह से कभी नहीं बिठाती तो दूसरे, तीसरे, चौथे स्टेन्ड पर उसको पकड़ता। एकबार तो उसी आसरे आसरे बस के साथ दौड़ते हुए लालदरवाजा तक पहुँच गया बस के साथ ही साथ। पेसेंजर अंदर से उतरे और हम भी पहुँच गये। मन में सोचा कि चलो, दो आने बच गये । उस समय कोई डंडा लेकर पीछे नहीं पड़ा था। मगर मन में आकर्षण रहता था कि कहीं सत्संग छूट न जाय।

घरवाले और दूसरे लोग कहते कि : "भाई ! भजन तो करो, मगर कुछ हमारी बात भी तो मानो।" माँ चाहती थी कि बेटा भले भजन करे। मगर वह भी कहती थी कि : "भाई की भी बात माननी चाहिए। समाज में भी तो रहना है। मामा के लड़के की शादी है। जरा उसमें भी जा आओ।" मैंने कहा : "मैं तो नहीं जाऊँगा। वहाँ शादी का खाना खाऊँगा तो मेरा भजन खराब हो जायेगा।" भाई ने भी समझाया। आखिर डाँट डपटने पर भी बस न चला तो अंत में बोला : "इससे तो न होता तो कहते ही नहीं।"

मैंने मन में सोचा कि अच्छा, तो हम नहीं ही हैं। गाँठ बाँध ली। फिर चुपके से घर से निकलकर चला गया मंदिर में। छः घंटे वहाँ बैठा रहा। इधर तो उनका दम घुट गया : "अरे लड़का चला गया! दुबारा उसे नहीं कहेंगे। भगवान ! हमारे लड़के को वापस भेज दो।"

(अनु. पेज ८ पर..)

**अगर घर में, चालू व्यवहार में, समाज में रहते हुए भी पहली, दूसरी भूमिका प्राप्त हो जाय तो फिर उस साधक को लोग दबा नहीं सकते, साधना मार्ग से डिगा नहीं सकते ।**

# 'राही रुक नहीं सकते...'

[ गतांक से जारी... ]

पेड़ों पर से एक-एक साध्वी को, एक-एक भक्तिन को, भक्ति की वेशधारी एक-एक व्यक्ति को परशुराम बारीकी से निहारते। सुबह से शाम तक उनकी यही प्रवृत्ति रही।

कई दिनों के बाद उनका तप भी फल गया। आखिर एक दिन कर्मावती पिता की जासूस दृष्टि में आ ही गई। परशुराम झट-झट पेड़ से नीचे उतरे और वात्सल्य - भाव से, रूँधे गले से 'बेटी... बेटी...' कहते हुए कर्मावती का हाथ पकड़ लिया। पिता का स्नेहल हृदय आँखों के मार्ग से बहने लगा। कर्मावती की स्थिति कुछ और ही थी। ईश्वरीय मार्ग में ईमानदारी से कदम बढ़ानेवाली वह साधिका तीव्र विवेक - वैराग्यवान हो चली थी, लौकिक मोह-ममता के सम्बन्धों से ऊपर उठ चुकी थी। पिता की स्नेह-वात्सल्य रूपी सुवर्णमय जंजीर भी उसे बाँधने में समर्थ नहीं थी। पिता के हाथ से अपना हाथ छुड़ाते हुए वह बोली :

"मैं आपकी बेटी नहीं हूँ। मैं तो ईश्वर की बेटी हूँ। आपके वहाँ तो केवल आयी थी कुछ समय के लिए। गुजरी थी आपके घर से। अगले जन्मों में भी किसीकी बेटी थी, उसके पहले भी किसीकी बेटी थी। हर जन्म में बेटी कहनेवाले बाप मिलते रहे हैं, माँ कहनेवाले बेटे मिलते रहे हैं, पत्नी कहनेवाले पति मिलते रहे हैं। आखिर कोई अपना नहीं रहता है। जिसकी सत्ता से अपना कहा जाता है, जिससे यह शरीर टिकता है वह आत्मा, वह परमात्मा, वह श्रीकृष्ण ही अपने हैं। बाकी सब धोखा ही धोखा है, सब मायाजाल है।"

राजपुरोहित परशुराम शास्त्र के अभ्यासी थे, धर्मप्रेमी थे, संतों के सत्संग में जाया करते थे। उन्हें बेटी की बात में निहित सत्य को स्वीकार करना पड़ा। चाहे पिता हो चाहे गुरु हो, सत्य बात तो सत्य ही होती है। बाहर चाहे कोई इन्कार कर दे, किन्तु भीतर तो सत्य असर करता ही है।

अपनी गुणवान संतान के प्रति मोहवाले पिता का हृदय माना नहीं। वे इतिहास, पुराण और शास्त्रों में से उदाहरण ले-लेकर कर्मावती को समझाने लगे। बेटी को समझाने के लिए राजपुरोहित ने अपना पूरा पांडित्य लगा दिया पर कर्मावती ? पिता की विद्वत्ता सुनते सुनते यही सोच रही थी कि पिता का मोह कैसे दूर हो सके। उसकी आँखों में भगवद्भाव के आँसू थे, ललाट पर तिलक, गले में तुलसी की माला। मुख पर भक्ति का ओज आ गया था। वह आँखें बन्द करके ध्यान किया करती थी। इससे आँखों में तेज और चुम्बकत्व आ गया था। 'पिता का मंगल हो, पिता का मेरे प्रति मोह न रहे' ऐसी भावना कर हृदय में दृढ़ संकल्प कर कर्मावती ने दो-चार बार पिता की तरफ निहारा। वह पण्डित तो नहीं थी लेकिन जहाँसे हजारों-हजारों पंडितों को सत्ता-स्फूर्ति मिलती है, वह सर्वसत्ताधीश का ध्यान किया करती थी। आखिर पंडितजी की पंडिताई हार गई और भक्त की भक्ति जीत गई। परशुराम को कहना पड़ा :

"बेटी ! तू सचमुच मेरी बेटी नहीं है, ईश्वर की बेटी है। अच्छा ! तू खुशी से भजन कर। मैं तेरे लिए यहाँ कुटिया बनवा देता हूँ, तेरे लिए एक सुहावना आश्रम बनवा देता हूँ।"

"नहीं नहीं... ।" कर्मावती सावधान होकर बोली : "यहाँ आप कुटिया बनाएँ तो कल माँ आएगी, परसों भाई आएगा, तरसों चाचा-चाची आएँगे, फिर मामा-मामी आएँगे। फिर वही संसार चालू हो जाएगा । मुझे यह माया नहीं बढ़ानी है।"

कैसा बच्ची का विवेक है ! कैसा तीव्र वैराग्य है ! कैसा दृढ़ संकल्प है ! कैसी साधना में सावधानी है ! धन्य है कर्मावती तुझे !

परशुराम निराश होकर वापस लौट गये। फिर भी हृदय में संतोष था कि मेरा हक्क का अन्न था, पवित्र अन्न था, शुद्ध आजीविका थी तो मेरे बालक को भी नाहक के विकार और विलास के बदले हक्क स्वरूप ईश्वर की भक्ति मिली है। मुझे अपने पसीने की कमाई का बढ़िया फल मिला। मेरा कुल उज्ज्वल हुआ। वाह... !

**परशुराम झट-झट पेड़ से नीचे उतरे और वात्सल्य-भाव से, रूँधे गले से 'बेटी...बेटी...' कहते हुए कर्मावती का हाथ पकड़ लिया। पिता का स्नेहल हृदय आँखों के मार्ग से बहने लगा। कर्मावती की स्थिति कुछ और ही थी। ईश्वरीय मार्ग में ईमानदारी से कदम बढ़ानेवाली वह साधिका तीव्र विवेक - वैराग्यवान हो चली थी, लौकिक मोह-ममता के सम्बन्धों से ऊपर उठ चुकी थी। पिता की स्नेह-वात्सल्य रूपी सुवर्णमय जंजीर भी उसे बाँधने में समर्थ नहीं थी।**

परशुराम अगर तथाकथित धार्मिक होते, धर्मभीरु होते, तो भगवान को उलाहना देते : 'भगवान! मैंने तेरी भक्ति की, जीवन में सच्चाई से रहा और मेरी लड़की घर छोड़कर चली गई? समाज में मेरी इज्जत लुट गई...' ऐसा करके सिर पीटते।

परशुराम धर्मभीरु नहीं थे। धर्मभीरु यानी धर्म से डरनेवाले लोग। ऐसे लोग कई प्रकार के वहम में अपने को पीसते रहते हैं।

धर्म क्या है?

ईश्वर को पाना ही धर्म है और संसार को 'मेरा' मानना, संसार के भोगों में पड़ना अधर्म है। यह बात जो जानते हैं, वे धर्मवीर होते हैं।

परशुराम बाहर से थोड़े उदास और भीतर से पूरे संतुष्ट होकर घर लौटे। उन्होंने अपने राजा शेखावत सरदार से बेटी कर्मावती की भक्ति और वैराग्य की बात कही। वह बड़ा प्रभावित हुआ। शिष्यभाव से वृन्दावन में आकर उसने कर्मावती के चरणों में प्रणाम किया। फिर हाथ जोड़कर आदर भाव से विनीत स्वर में बोला :

"हे देवी! हे जगदीश्वरी! मुझे सेवा का मौका दो। मैं सरदार होकर नहीं आया, आपके पिता का स्वामी होकर नहीं आया, अपितु आपका तुच्छ सेवक बनकर आया हूँ। मैं कुछ सेवा करना चाहता हूँ। कृपया इन्कार मत करना। ब्रह्मकुण्ड पर आपके लिए छोटी-सी कुटिया बनवा देता हूँ। मेरी प्रार्थना को ठुकराना नहीं।"

कर्मावती ने सरदार को अनुमति दी।

आज भी वृन्दावन के ब्रह्मकुण्ड की कुटिया मौजूद है।

पहले अमृत जैसा पर बाद में विष से भी बदतर हो, वह विकारों का सुख है। प्रारंभ में कठिन लगे, दुःखद लगे, बाद में अमृत से भी बढ़कर हो, वह भक्ति का सुख है। ईश्वर के मार्ग पर चलते वक्त प्रारंभ में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, कई प्रकार की कसौटियाँ आती हैं। वह जीवन इतना सादा, सीधा, सरल, आडम्बर रहित होता है कि बाहर से देखनेवाले संसारी लोगों को दया आती है : 'बेचारा भगत है, दुःखी है।' जब भक्ति फलती है, तब वे ही सुखी दिखनेवाले हजारों लोग उस भक्त-हृदय की कृपा पाकर अपना जीवन धन्य कर सकते हैं। भगवान की भक्ति का यह प्रभाव है।

जय हो प्रभु! तेरी जय हो। तेरे प्यारे भक्तों की जय हो। हम भी तेरी पावन भक्ति में डूब जाएँ। हे परमेश्वर! ऐसे पवित्र दिन जल्दी आयें।

नारायण... ! नारायण... !! नारायण... !!!

(सम्पूर्ण)

* * *

# आम

आम सभी फलों में सर्वश्रेष्ठ तथा अतिप्रिय फल होने से वह फलों का राजा तथा अमृतफल गिना जाता है। सम्पूर्ण विश्व में आम मात्र भारत में ही अधिक परिमाण में होता है। अपने देश में प्रति वर्ष बारह लाख टन से भी अधिक आम का उत्पादन होता है। वैशाख से ज्येष्ठ एवं आषाढ़ (बरसात आने तक का गरमी का समय) आम का वास्तविक मौसम माना जाता है। भारत में करीब आठ सौ प्रकार के आम होते हैं। सामान्य रूप से केसर आम का प्रथम नंबर माना जाता है। उसके बाद गुजरात में वलसाड़ का वलसाड़ी हाफूस, महुवा का जमादार तथा जूनागढ़ के साकरिया आम उत्तम गिने जाते हैं। महाराष्ट्र में हाफूस, पायरी, गोवा में तोतापुरी, उत्तर भारत में बनारसी, लंगड़ा, सफेद लखनवी तथा किशन भोग, दक्षिण भारत में शेवप्पा, खोवरे, सुंदरी उत्तम प्रकार के आम माने जाते हैं।

आम काट कर अथवा रस निकाल कर खाया जाता है। देशी आम्रवृक्ष के आमों की गुटली में रेशे अधिक होते हैं; अत: ऐसे आम चूस कर खाये जाते हैं। कलमी आम, हाफूस आदि की गुटली में रेशे नहीं होते; इसीसे ये आम काट कर खाये जाते हैं। औषध प्रयोग की दृष्टि से कलमी आम की तुलना में देशी आम अधिक लाभदायक हैं। कलमी आम से देशी आम अधिक गुणकारी होता है। इसका कारण यह है कि इसका रस शीघ्र पच जाता है। बिना रेशे का, मधुर, पका हुआ, अधिक मिठास युक्त तथा पतली या छोटी गुठली वाला आम उत्तम माना जाता है।

गुर्वाम्र वातजित् पक्वं स्वाद्वमलं कफशुक्रकृत् ॥

अर्थात् पका आम भारी, वायु को नाश करे ऐसा, मीठा, खट्टा तथा कफ एवं वीर्य को उत्पन्न करने वाला है। भोजन के साथ आम खाने से मेद बढ़ता है, खून के रक्तकण बढ़ते हैं; तथा कफ की वृद्धि नहीं होती। दूध के साथ आम लेने से वीर्य की वृद्धि होती है। आम आंतों के लिए उत्तम औषध है। आमाशय के रोग, पेट के, फेफड़ों के तथा रक्त विकार के रोगों में समझ पूर्वक प्रयोग करने से अवश्य लाभ करता है। अच्छा पका हुआ आम खाने से शरीर की कांति बढ़ती है तथा शरीर तेजस्वी और सुंदर बनता है। इससे शरीर में रसधातु अधिक परिमाण में उत्पन्न होता है। फलस्वरूप मांस, मज्जा, अस्थि तथा शुक्र आदि सभी धातुओं की वृद्धि होती है।

दूध तथा घी के साथ आम का उपयोग करने से वात-पित्त के विकारों का शमन होता है। शहद के साथ आम खाने से कफ का शमन होता है।

आम्र-मंजरी के छोटे आम की चटनी तथा कचूंबर बनता है। कच्चे आम को छिल कर, काट कर सुखाने से आम की खटाई तैयार होती है। इसका दाल सब्जी में ईमली के स्थान पर उपयोग करना अधिक हितकारी है। ईमली की तुलना में आम की खटाई पथ्यकारी तथा रुचिकर मानी जाती है। कच्चे आम के कई प्रकार के अचार बनते हैं। कच्चे आम में गुड़ डालकर सब्जी बनाई जाती है। उत्तर भारत में कच्चे आम को बाफ कर उसका रस निकाल कर उसमें गुड़ तथा चीनी योग्य परिमाण में डालकर पीने की प्रथा है। इससे लू मिटाई जा सकती है तथा इसका प्रयोग करने से लू नहीं लगती; ऐसा माना जाता है।

पके आम से सोस तथा अन्य स्वादिष्ट पेय पदार्थ बनाये जाते हैं। आम का मुरब्बा रक्तवर्धक माना जाता है।

आम के अंदर की गुठली सेक कर खाने से मीठी लगती है। गुठली बवासीर, दस्त, रक्तातिसार (पेचिश) तथा रक्तपित्त पर अत्यन्त उपयोगी मानी जाती है। गुठली में से निकला हुआ तेल जोड़ों के दर्द के लिए लाभकारी है।

आम्रवृक्ष को उसका फल रसयुक्त होने से 'रसाल,' फूलों की सुगंध अत्यन्त श्रेष्ठ होने से 'अति सौरभ,' आम्र मंजरी तथा फल अत्यन्त कामोत्तेजक होने से 'कामांग,' वसन्त ऋतु का दूत होने से 'मेघदूत' तथा कोयल के समूह को अत्यन्त प्रिय होने से 'पिकवल्लभ' कहा जाता है। आम्रवृक्ष का फल, फूल, पत्ते, छाल, तथा गुठली सभी का उपयोग औषधि के रूप में होता है।

आम्रवृक्ष का बौर ठंडा, रुचि उत्पन्न करने वाला, दस्त को रोकनेवाला, रक्तविकार, अतिसार, कफ तथा पित्त और प्रमेह को दूर करने वाला है।

आम की गुठली उल्टी, अतिसार तथा हृदय के दाह को शमन करती है।

आम के पत्ते रुचि उत्पन्न करने वाले तथा कफ और पित्त का शमन करने वाले हैं।

पके आम के रस कपड़े पर डाल कर धूप में सुखायें और फिर उस पर दूसरा रस सुखायें; ऐसा बार बार करके इससे जो स्तर बनते हैं; इसे आम्रवर्त कहते हैं। आम्रवर्त रुचि उत्पन्न करने वाले, अजीर्ण दूर करने वाले, सूर्य की किरणों के द्वारा पके होने से प्यास, उल्टी, वात तथा पित्त का शमन करने वाले हैं।

उत्तम प्रकार के मीठे पके देशी आम लेकर ठंडे जल में भिगो रखना चाहिये। फिर अच्छी तरह से धो कर डंठल अलग कर थोड़ा रस बाहर निकाल देना चाहिये। इसके बाद आम धीरे धीरे चूसना चाहिये। इस तरह करीब ढाई सौ ग्राम जितना रस चूसना चाहिए। आम को चूसने के बाद गाय का अथवा बकरी का धारोष्ण दूध आधा सेर पीना चाहिये। मंद प्रकृति वालों को इस तरह दिन में एक बार दूध तथा आम का सेवन करना चाहिये। प्रयोग दरम्यान एक ही प्रकार के आम का उपयोग करना चाहिये और उस समय दरम्यान दूसरा भोजन बंद रखना चाहिये। इस तरह एक दो मास तक मात्र दूध तथा आम के रस पर रहने से पाचन क्रिया सुधरती है। अजीर्ण, मंदाग्नि, क्षय, श्वास, दम तथा हृदय रोग के रोगियों को अत्यन्त लाभ होता है, खून बढ़ता है, शक्ति बढ़ती है। चेहरा सुंदर और तेजस्वी बनता है। वीर्य की कमजोरी तथा रक्त विकार दूर होता है तथा नया जीवन प्राप्त होता है। क्षय के रोगी भी इस तरह विधिपूर्वक करें तो रोगमुक्त बनते हैं। इस प्रयोग को 'आम्रकल्प' कहते हैं। यह प्रयोग अति उत्तम तथा निर्भय है। नुकसान होने का भय नहीं है। संग्रहणी तथा अर्श पीडितों तथा अतिसारवालों को बकरी का दूध तथा धातुक्षीणता तथा मलावरोधवाले रोगियों को गाय का दूध अधिक अनुकूल रहता है।

अच्छे प्रकार के पके आम का २५० ग्राम रस काच के बरतन में निकाल कर, शुद्ध ५० ग्राम शहद मिला कर जल्दी सुबह तथा शाम को सेवन करना चाहिए। बीच में दिन में दो या तीन बार गाय या बकरी का दूध पीना चाहिये और ऊपर के अनुसार भोजन करना चाहिए। जल का भी त्याग करना चाहिए। बहुत प्यास लगे तो अदरक का रस निकालकर थोड़ा पानी लेना चाहिए। एक दो मास इस प्रयोग के करने से जीर्णज्वर, शरीर सूखने का रोग, शोषरोग, खांसी आदि दूर होकर बल, वीर्य, रक्त, मांस तथा ओजस की वृद्धि होती है।

पके आम का रस शहद के साथ लेने से पेट की तिल्ली की वृद्धि मिटती है, प्लीहा दूर हो जाता है।

आम की गुठली का गर्भ ४ से ५ ग्राम शहद में देने से दस्त बंद होते हैं। बालक

(अनु. पेज नं. १६ पर..)

**आम सब फलों का राजा है। मनुष्य शरीर सब योनियों का राजा है। तेरा मन शरीर का राजा है और तू मन का राजा है। हे राजाओं के राजा! तू अपने आत्मराज्य में खूँटा गाड़। आम के भिन्न-भिन्न उपयोगों से तेरा शरीर स्वस्थ रहे; यह तो हम चाहते हैं; साथ में यह भी अवश्य चाहते हैं कि तू राजाओं का राजा अपनी महिमा में अवश्य जाग।**

## ध्यान-योग महिमा

[ १६-१-'९१ विद्यार्थी शिविर, अहमदाबाद आश्रम]

दीन-दुःखियों को करुणावश देना दया है और श्रेष्ठ पुरुषों की सेवा में अहोभावपूर्वक अर्पण करना यह दान है। हम यहाँ दान करते हैं तो उसका देश, काल, पात्र के अनुसार सौगुना, सहस्रगुना, अनंतगुना फल देर-सबेर मिलता है। परंतु भगवान शिवजी कहते हैं : "दान से तुम्हारा धन बढ़ता है, धन शुद्ध होता है। धन से अन्न शुद्ध होता है, अन्न से मन शुद्ध होता है, मन से बुद्धि भी पवित्र होती है।" यह क्रमिक प्रक्रिया है परंतु ध्यान करो तो तुम्हारा मन और बुद्धि सीधे ही शुद्ध हो जायेंगे। एकदम सीधा रास्ता है। दान करना अच्छा है, मगर उसमें दाता होने का अहंकार आ सकता है। परंतु ध्यान करोगे तो ध्यानी होने का अहंकार विलय होता जायेगा। अहंकार ध्यान से ही नष्ट होगा।

**नास्ति ध्यानसमं तीर्थं, नास्ति ध्यानसमं यज्ञम्।**
**नास्ति ध्यानसमं दानं, तस्मात् ध्यानं समाचरेत्॥**

दान में तो तुम रुपये-पैसे, वस्तु किसीको देते हो लेकिन ध्यान करते हो तो तुम अपने अहं को ही भगवान को दे डालते हो। इसलिए ध्यान बड़ा दान है।

आप शिवजी का कोई भी फोटो देखोगे तो उसमें पाओगे कि आंखों पर एक दूसरी ध्यान की पर्त छाई हुई है। जो ध्यान करनेवाले योगी हैं, उन्हें देखते ही उनकी आंखों से पता चल जायेगा कि वे ज्यादा ध्यान करते हैं।

एकत्व में जिनकी सदा निष्ठा है वे शिवजी माता पार्वती से कहते हैं :

**'नास्ति ध्यानसमं तीर्थम्...'**

जो सदा नित्य भगवान शिवजी का दर्शन करती है और उनका उपदेश सुनती है ऐसी पार्वती को शिवजी ध्यान की महिमा बता रहे हैं। जो श्रीकृष्ण का दर्शन कर रहा है, श्रीकृष्ण जिसके घोड़ों की बागडोर संभाल रहे हैं ऐसा पुण्यात्मा है अर्जुन। क्षत्रिय को जितना उन्नत होना चाहिए उतना उन्नत पुरुष अर्जुन था। अर्जुन ऐसा संयमी है कि स्वर्ग की श्रेष्ठ अप्सरा ऊर्वशी उसे कह रही है अपने साथ पति-पत्नी का व्यवहार करने के लिए। तब अर्जुन उसका अस्वीकार करता है। ऊर्वशी कहती है कि तुम मेरी बात नहीं मानो तो तुम्हें शाप दूँगी। अर्जुन कहता है : "माताजी, तुम्हारा शाप मुझे शिरोधार्य है।" और एक वर्ष तक

नपुंसक बने रहने का शाप सिर पर उठा लिया, जो कि उसे तो अज्ञातवास के समय आशीर्वाद समान काम में आया। अर्जुन की ऐसी ऊँचाई थी, चारित्र्य बल था, क्षात्रबल था। ऐसे अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

**'तस्मात् योगी भवार्जुन।'**

'हे अर्जुन! तू योगी बन जा।'

युद्ध के मैदान में दोनों सेनाओं के बीच जहाँ हाथी चिंघाड़ रहे हैं, घोड़े हिनहिना रहे हैं और योद्धा युद्ध के प्रारंभ की प्रतीक्षा में हैं ऐसी जगह पर भी श्रीकृष्ण निश्चिंत हैं, क्योंकि वे अपने विश्वनियंता स्वरूप को, अपने आपको ठीक से जानते हैं, और अर्जुन को भी वहाँ लिये जा रहे हैं।

भगवान कैसे हैं? जीव की घोड़ागाड़ी चलाने को भी राजी

दान में तो तुम रुपये-पैसे, वस्तु किसीको देते हो लेकिन ध्यान करते हो तो तुम अपने अहं को ही भगवान को दे डालते हो। इसलिए ध्यान बड़ा दान है।

हो जाते हैं। शबरी के जूठे बेर खाने को भी राजी हो जाते हैं। वे बताना चाहते हैं कि : "हे जीव ! तू अपने को पहचान। मैंने तुझमें कैसी योग्यता दी है? तुझमें प्रेम की, नियमनिष्ठा की, सेवा की ऐसी सामर्थ्य है कि मैं खुद भगवान तेरे द्वार पर खींचकर चला आता हूँ।"

कभी अपने को लाचार, दीन हीन मत मानो। ईश्वर तुम्हारी घोड़ागाड़ी चलाने को राजी हो जाते हैं, तुम्हारे लिए बार-बार अवतार लेकर तुम्हारे व्यवहार की उलझनों को सुलझाने के लिए प्रकट हो जाते हैं। इसीलिए तुम अपने अंदर छुपे हुए भगवान को पहचान कर अमर हो जाओ।

**भगवान कैसे हैं? जीव की घोड़ागाड़ी चलाने को भी राजी हो जाते हैं। शबरी के जूठे बेर खाने को भी राजी हो जाते हैं। वे बताना चाहते हैं कि "हे जीव ! तू अपने को पहचान। मैंने तुझमें कैसी योग्यता दी है? तुझमें प्रेम की, नियमनिष्ठा की, सेवा की ऐसी सामर्थ्य है कि मैं खुद भगवान तेरे द्वार पर खींचकर चला आता हूँ।"**

एक संत हो गये। उनका नाम था योगानंद सरस्वती। ग्वालियर के पास कहीं पर उनका स्थान अभी है। उनको योग में ज्यादा रुचि थी और चेतन समाधि सीखना चाहते थे। वे इस आशा में भ्रमण करते रहते थे कि कोई सिद्ध योगी गुरु मिल जाय और मुझे योग सिखाये।

घूमते-घामते उन्हें सीतापुर के अरण्य में कोई योगी मिल गये। उनके पैर पकड़े, प्रार्थना की : "महाराज ! मुझे योगी बनना है। चेतन समाधि सीखनी है।"

योगी ने बताया कि : "जितना मैं जानता हूँ उतना तो तुम जानते ही हो। अब बात रही सिद्ध योगी बनने की, चेतन समाधि सीखने की। सिद्ध योगी गुरुओं को समाज पहचानता नहीं। ऐसे सिद्ध योगी समाज में आते नहीं। इधर तो कोई ऐसे योगी हैं नहीं। परंतु मेरे ध्यान में एक जगह है, जहाँ सिद्धयोगी रहते हैं। वह जगह ऐसी है जहाँ साधारण लोग जा भी नहीं सकते।"

योगानंद ने कहा : "महाराज ! कृपा करके उसका पता दीजिये। योगी का दर्शन भी पापनाशक होता है। अगर वे कृपा कर देंगे और मुझे योग सिखा देंगे तो फिर मैं देशवासियों की सेवा करूँगा, उन्हें उन्नत करूँगा।"

उस योगी ने कहा : "ऐसा करो। ऋषिकेश से बद्रीनाथ के रास्ते जाओगे तो विष्णु-प्रयाग आयेगा। विष्णुप्रयाग से १८ मील, लगभग २८ कि. मी. पूर्व दिशा में जाना। वहाँ मृत्युस्त्रय पहाड़ है। उस पहाड़ की गहराई में तुम जाना। वहाँ आगे बढ़ते जाना। दुर्गम मार्ग पार करने के बाद तुम्हें सिद्ध योगी के दर्शन होंगे।" इस प्रकार का पता उन योगी ने योगानंद सरस्वती को समझा दिया।

**मैं लंबा होकर सोते हुए अपने शरीर को आगे खींचता गया। बिल्कुल अंधेरा था। भय लगा। मौत जैसे बगल से गुजर रही है। रेंगते हुए और थोड़ा-सा आगे बढ़ पाया कि सुरंग जैसा छिद्र पूरा हो गया। आगे जैसे कि खड्डा है। आगे शरीर को झुकाकर हाथ पहुँचाने की कोशिश की, थोड़ा और बढ़ा तो धड़ाम से सिर के बल गिर पड़ा।**

अब योगानंद की ही भाषा में...

"मैं विष्णुप्रयाग तक पहुँचा। फिर पूर्व की ओर चलते चलते पहाड़ी लोगों से पता लगाकर उस पहाड़ तक पहुँचा। फिर उस पहाड़ की गहराई में गया। मुझे बताये गये थे वे चिन्ह मिलते गये। मेरा हौसला भी बढ़ता गया और आश्चर्य भी हुआ कि यहाँ, ऐसी जगह में कोई योगी, कोई मनुष्य कैसे रहते होंगे? बिल्कुल सन्नाटा था, वहाँ कोई नहीं था। फिर सोचा कि समर्थ योगी लोग तो ऐसी जगह रहते हैं जहाँ कोई

न हो। वे वायु पीकर भी जी सकते हैं, संकल्प बल से कुछ भी बना सकते हैं। ऐसे योगी भी होते हैं। यह सब मैंने सुना था।

मैं चलता गया, चलता गया। आगे दो तीन मार्ग मिले। अब किस ओर जाना? किससे पूछें? बड़ी उलझन थी। मैंने स्वरज्ञान का उपयोग किया। जो स्वर चल रहा था उसी तरफ के रास्ते चला। आगे एक लंबी-सी गुफा आयी। पचास-साठ फीट लंबी होगी। पंद्रह-बीस फीट चौड़ी होगी। मैं उसमें घुसकर लांघते हुए आगे बढ़ा। उसके दूसरे छौर पर दो पहाड़ियों के बीच एक छोटा रास्ता आया। उसे लांघा तो चारों तरफ अंधेरा था। थोड़े आगे सूर्य की किरणों जैसा भास हुआ। पानी के चशमे की कलकल आवाज़ आ रही थी। भय भी लगा। फिर उत्साह भी बना कि मैं ऐसे योगियों से मिलने जा रहा हूँ जो दुर्लभ होते हैं।

छोटी-सी खुली जगह थी। कुछ मनोरम्य फूल आदि लगे थे। गुफा जैसा कुछ दिख रहा था। वहाँ दो योगी बैठे थे। एक की लंबी सफेद दाढ़ी और दूसरे योगी की काली दाढ़ी और नाटा शरीर। मैं वहाँ जाकर बैठा रहा... तीन घंटे बीते तब युवान योगी ने आँखें खोली : "अच्छा ! तुम आये हो? इधर कैसे पहुँच गये? "

ऐसा करते करते आगे बढ़ते हुए पानी की जगह तक पहुँचा। आगे कोई रास्ता नहीं था। बीच में पानी का चशमा, छोटा-सा तालाब जैसा बना हुआ था। मैंने हिंमत की। अंदर उतरा। घुटने भर पानी था। उसे लांघकर पार उतरा। सामने जो पत्थर था, उसमें एक छोटा-सा सुरंग जैसा छिद्र था जिसमें चलकर या बैठकर भी नहीं जा सकते। यह सब उन सीतापुर वाले योगी के बताये हुए चिन्ह ही प्रगट रूप में पाये गये इसलिए हौसला बना हुआ था।

जैसे साँप रेंगते हुए जाता है ऐसे ही मैं लंबा होकर सोते हुए अपने शरीर को आगे खींचता गया। पाँच-सात फीट आगे गया होऊँगा। बिल्कुल अंधेरा था। आगे रास्ता सूझता नहीं था। भय लगा। मौत जैसे बगल से गुजर रही है। वापस आने को सोचा मगर यह अब संभव नहीं था। वापस कैसे लौटूं? और वापस लौटने का कोई मतलब भी नहीं था। अब पैर भर ही लिया तो इस पार या उस पार। रेंगते हुए और थोड़ा-सा आगे बढ़ पाया कि सुरंग जैसा छिद्र पूरा हो गया। आगे जैसे कि खड्डा है। मगर वह कितना गहरा है, क्या पता? निरा अंधेरा था। आगे शरीर को झुकाकर हाथ पहुँचाने की कोशिश की मगर हाथ को जमीन का स्पर्श न हुआ। आगे क्या है? यह देखने को थोड़ा और बढ़ा तो धड़ाम से सिर के बल गिर पड़ा। मगर दैवयोग से वह चार-पाँच फीट की गहराई थी। रेता जैसा बिछा था। इसलिए चोट नहीं आयी। मैं संभलकर और धीरे-से आगे बढ़ने लगा। आगे क्या देखता हूँ कि कोई मनोहर ध्वनि आ रही है। कभी नुपूर की झनकार, तो कभी ताली पीटने का स्वर, कभी ॐकार का गुंजन। अजीब अनुभव था उस ध्वनि का। थोड़ा हल्का-सा प्रकाश भी प्रतीत हुआ। इधर-उधर देखकर जहाँ से आवाज आ रही थी, उसकी ओर आगे बढ़ा। उधर जाने पर पाया कि छोटी-सी खुली जगह थी। कुछ मनोरम्य फूल आदि लगे थे। गुफा जैसा कुछ दिख रहा था। वहाँ दो योगी बैठे थे। एक की लंबी सफेद दाढ़ी और दूसरे योगी की काली दाढ़ी और नाटा शरीर। सफेद दाढ़ी वाले पुराने योगी मालूम होते थे और उनकी काया लंबी थी। काली दाढ़ीवाले छोटे कद के थे। दोनों समाधिस्थ थे।

**योगी ने सोचा कि अच्छा ! योग सीखने आया है और कपट साथ में लेकर?**

मैं वहाँ जाकर बैठा रहा... अदब से बैठा ही रहा। तीन घंटे बीते तब युवान योगी ने आँखें खोली : "अच्छा ! तुम आये हो? इधर कैसे पहुँच गये? " मैंने उन्हें परिचय दिया और जिज्ञासा व्यक्त की। उन्होंने

कहा : “तुम्हें भूख लगी होगी। पहले भोजन पा लो।” मैं सोच रहा था कि यहाँ भोजन कहाँ होगा कि खाऊँगा। इतने में वे योगी बोले : “उधर की ओर बटलोई में ढँका पड़ा है। जितना जरूर हो उतना ही लेना। जूठा मत करना, जूठन मत छोड़ना। प्रसाद का बिगाड़ मत करना। मैं आज्ञा पाकर खाने को उठा। मेरे मन में हुआ कि बटलोई में कुछ कंदमूल होगा। यहाँ और तो क्या आ सकता है? मगर ज्यों ही बटलोई का ऊपर का ढक्कन उठाया तो देखा कि वही बूँदी के लड्डू और नमकीन जो मुझे बहुत प्यारा था एवं रास्ते में खाने के लिए साथ लेकर चला था और जिसे रास्ते में ही खतम किया था, वही का वही मैं यहाँ देख रहा था। मैं सोचने लगा कि ये यहाँ कहाँ से आ गये? मनभावन स्वादिष्ट भोजन देखकर मैंने लपककर उठाना शुरु किया। याद आया कि जितना जरूर हो उतना ही लेने की आज्ञा है। एक लड्डू और थोड़ा नमकीन लिया। मगर भूख जोरों की थी। लगा कि इतने से पेट भरेगा नहीं। जूठे हाथ फिर लेना कैसे? सोचा एक लड्डू और ले लूँ। नमकीन भी थोड़ा लिया। फिर से कमबख्त मन सोचता है कि अगर और लड्डू चाहिए तो बाद में कैसे लूँगा? एक लड्डू और ले लिया। और वैसे प्रतिदिन के भोजन की अपेक्षा दुगुना परोस दिया, भूख के कारण। मगर आश्चर्य तो यह हुआ कि मैंने थोड़ा नमकीन और एक लड्डू भी पूरा न खाया और पेट भर गया। अब हुआ कि यह तो जूठा रह गया इसे क्या करूँ? वहाँ मुझे योगी देख नहीं पा रहे थे न मैं उन्हें देख सकता था। बचा हुआ भोजन धीरे-से पानी के कुंड में डाल दिया और मुँह पोंछकर, कुल्ला करके खानदान आदमी होकर योगी के पास जाकर बैठ गया।

योगी ने पूछा : “कैसे! भोजन-प्रसाद पा लिया?”

“हाँ।”

“कुछ बचाया तो नहीं? जूठा तो नहीं छोड़ा?”

**ऐसे समर्थ योगी पुरुष मिले फिर भी जीव की गन्दी आदतों ने उसकी उन्नति नहीं होने दी। संत के साथ कपट, स्वादेन्द्रिय की लोलुपता, चारित्र्यबल एवं संयमबल से रहित जीवन जीव को तुच्छ तिनके की नांई ईधर से उधर फेंकता रहता है।**

मेरा तो दिमाग चकराने लगा। पैरों के नीचे से जमीन खिसकी जा रही थी। मैंने वहाँ अकल लड़ाना शुरू किया, बात बनाना शुरू किया :

“महाराज! भोजन बड़ा स्वादिष्ट था। मेरा प्यारा भोजन मुझे मिल गया।” मैंने बात टाल दी।

योगी ने सोचा कि अच्छा! योग सीखने आया है और कपट साथ में लेकर?

“अच्छा! बैठो। योग सीखना है न? बैठो इधर। पद्मासन लगाओ। पेट भरा है और पद्मासन नहीं लगता तो कोई बात नहीं सिद्धासन लगाओ। आँख बंद करो। ध्यान धरो।”

मैंने आँख बंद करके ज्यों ध्यान करने की कोशिश की त्यों जोर से शोर-गुल सुनाई पड़ा : “गंगे मात की जय! काली कमलीवाले बाबा की जय!! हर हर महादेव!!!”

मैंने सोचा : यह क्या? कुतुहलवश आँख खोली। अरे! आँख बंद की तो विष्णुप्रयाग से २८ कि. मी. दूर पर्वत की गुफा में और खोली तो ऋषिकेश के घाट पर बैठा हूँ! फिर तीन बार उस पर्वत की ओर ढूँढ़ा मगर आज (सन १३५४) तक वह गुफा नहीं मिली। यह खटका मुझे अभी भी है।

ऐसे योगी भी हैं जो संकल्प बल से कहीं का कहीं पहुँचा दें।

**‘योग समान बल नहीं।’**

रामायण में भी आता है कि स्वयंप्रभा ने हनुमान, अंगद, जांबवान आदि सबको अपने योगबल से अपने आश्रम से समुद्रकिनारे पहुँचा दिया था।

**ठाँडे सकल सिंधु के तीरा।**

मुझे खेद है कि ऐसे समर्थ योगी पुरुष मिले फिर भी जीव की गन्दी आदतों ने उसकी उन्नति नहीं होने दी। संत के साथ कपट, स्वादेन्द्रिय की लोलुपता, चारित्र्यबल एवं संयमबल से रहित जीवन जीव को तुच्छ तिनके की नांई ईधर से उधर फेंकता रहता है।”

*

दैनिक भास्कर
इन्दौर बुधवार १८ मार्च १९९२

# नगर का वातावरण संपूर्ण रूपेण हरिओम मय हो गया

**जावद। स्वामी श्री आशाराम जी महाराज के रतलाम सत्संग मंडल द्वारा प्रस्तुत नगर में दो दिवसीय कीर्तन, भजन एवं सत्संगी कार्यक्रमों से पूरे नगर में एक 'हरिओम' मय वातावरण निर्मित हो गया है। चारों ओर हरि ओम, हरि ओम की धुन ने एक अध्यात्मिक क्रांति पैदा कर दी है।**

स्थानीय हरि ओम सेवा समन्वय नामक संस्था द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में रतलाम सत्संग मंडल को आमंत्रित किया गया था। सत्संग मंडल के करीब ७० सदस्यों ने (पुरुष और महिलाएं) दोनों दिनों में प्रातः ६ बजे से १० बजे तक नगर के बाजारों, प्रमुख गलियों में प्रभातफेरी निकालकर संगीतमय भजन एवं कीर्तन प्रस्तुत किया। भजन एवं कीर्तन की आध्यात्मिक धुनों पर नृत्य करते हुए सत्संगी भाईयों और बहनों ने नगरवासियों को भी सड़कों पर नृत्य करने जैसा माहौल दे दिया।

श्री आशारामजी महाराज के आदमकद चित्र व उनकी चरण पादुकाओं के साथ नगर में प्रभातफेरी निकाली गई। जो आज तक निकली समस्त प्रभातफेरियों और शोभायात्राओं से काफी भिन्न थी। इस प्रभातफेरी से लोगों का आकर्षण बढ़ा और सायंकाल आयोजित संगीतमय कीर्तन भजन के कार्यक्रम में बहुत अच्छी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम स्थल पर भी भजन एवं कीर्तन में भाव पूर्ण मुद्राओं के साथ नृत्य करते हुए सत्संग मंडल के सदस्यों ने उपस्थित श्रोताओं का मन जीत लिया। इस कार्यक्रम ने नगर को एक अनूठा अध्यात्मिक माहौल दिया है जिसे लंबे समय तक भुलाया जाना संभव नहीं होगा।

कार्यक्रम के अंतिम दिन पूज्यपाद स्वामी श्री आशाराम जी महाराज को आमंत्रित करने का हर्षध्वनि के बीच निर्णय लिया गया। जिसे सभी श्रोताओं ने भी तालियों की गड़गड़ाहट के साथ अपनी स्वीकृति प्रदान की। इस कार्यक्रम को मूर्त रूप देने के लिए एक समिति बनाई गई है, जिसके अध्यक्ष सुधीरजी अग्रवाल एवं सचिव जगदीश शर्मा बनाए गए हैं। शीघ्र ही एक प्रतिनिधिमंडल संत श्री से संपर्क कर अपना आग्रह प्रस्तुत करेगा।

आयोजित कार्यक्रम की सफलता में शिखर चोपड़ा, श्री बंशीभाई, गोपाल राठी, कमल एरन, लक्ष्मीनारायण सोलंकी, मदनलालजी तिवारी, श्री घासीलाल, गोपाल ओझा सहित कई लोगों का सक्रिय सहयोग रहा।

## दस वर्ष से विलम्ब में पड़े हुए मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा

### 'गुरुकृपा हि केवलं...'

हमारे गाँव मगोल में अम्बाजी एवं शिव परिवार मंदिर का निर्माण कार्य अंतिम दस साल से बीच में ही रुका हुआ था। सन १९८९ में मैं सुरत आश्रम में गया और पू. बापू के शिविर में सम्मिलित हुआ। नामदान भी लिया। तदनन्तर मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा के लिए संकल्प किया कि जब तक मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा न हो जाए तब तक बालदाढ़ी नहीं उतारूँगा.... और मैंने मंदिर-निर्माण का बीच में रुका हुआ कार्य हाथ में लिया।

मंदिर निर्माण का कार्य पूरा हुआ। अब मूर्तियाँ लानी थीं। उसके लिए रूपये नहीं थे। सन १९९१ के जन्माष्टमी शिविर में सुरत आश्रम में पूज्य गुरुदेव के समक्ष मैंने अपनी समस्या सुनाई और उनसे आशीर्वाद लिये। गुरुदेव ने कहा :

"जाओ, तुम्हारा मंदिर हो जाएगा। मैं दिसम्बर में उसकी प्राणप्रतिष्ठा कर दूँगा। तुम निष्ठा से कार्य करो।"

बस, दूसरे ही दिन गुरुदेव की आज्ञा लेकर मैं गया। मंदिर में गुरुदेव की फोटो रखकर सुबह-शाम गुरुदेव की आरती करना प्रारम्भ कर दिया। .... और दो महीने में जो काम पूरा होना असंभव-सा लग रहा था वह मूर्तियाँ लाने का काम पूरा हो गया। रूपये कहाँसे आये, कैसे आये.... मुझे इस रहस्य का कुछ पता नहीं है। बस, गुरुदेव के आशीर्वाद से मूर्तियाँ आ गईं और दिनांक ३० दिसम्बर '९१ के दिन गुरुदेव के पावन करकमलों द्वारा मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। गुरुदेव ने सत्संग भी किया और अपनी मधुर वाणी से बीस हजार से भी अधिक श्रोताजनों को पावन बनाया। उस प्रसंग पर तीन दिनों के लिए भण्डारा भी चलता रहा। पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा से सब ग्रामवासी सत्संग की गंगा में पावन बन गये। सद्गुरुदेव की जय हो...

—प्रतापसिंह भीमसिंह गोहिल
मगोल, तहसील चोर्यासी, जि. सुरत।

# संस्था समाचार

राजधानी दिल्ली में हरिनाम - संकीर्तन की भावगंगा, श्रीकृष्णार्जुन - संवाद गीता की ज्ञानगंगा और कुण्डलिनी योग की ध्यानगंगा के सत्र में पंचरंगीन प्रजा को प्रभु - प्रेम में पागल बनाकर पूज्यश्री ने दिनांक ५ मार्च से महानगरी बम्बई में दूसरा सत्र शुरु किया। यह उल्लेखनीय है कि दिल्ली में भारतीय जनता पक्ष के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण अडवाणी, उपप्रसारण मंत्री कु. डॉ. गिरजा व्यास एवं अन्य संसद सदस्य भी पूज्यश्री की भक्ति, योग और ज्ञान की त्रिवेणी में गोता लगाने के लिए, सत्संग-लाभ पाने के लिए आये थे। दिल्ली की विभिन्न धार्मिक संस्थाओं के साधु संत भी इन आदर्श ऋषि के दर्शन एवं सत्संग में नियमित रूप से आकर उनकी तात्त्विक वाणी से वेद-वेदान्त के रहस्य सुनते थे।

## बम्बई में ५ से ११ मार्च

दिनांक ५ से ७ मार्च घाटकोपर, बम्बई में पूज्यश्री का अलौकिक सत्संग समारोह आयोजित किया गया। पोस्टर्स, बेनर्स, होर्डिंग्स आदि से बम्बई महानगरी के रास्ते, रेलवे स्टेशन आदि तमाम स्थान आच्छादित हो गये। पूज्यश्री की अमीदृष्टि पाने के लिए जनता की अभीप्सा पूज्यश्री के आगमन के साथ ही सन्तुष्ट हुई। तीन दिन के लिए घाटकोपर में, तदनन्तर चार दिन तक उल्लासनगर के गोल मैदान में दिव्य सत्संग समारोह चलता रहा। गोल मैदान में विभिन्न धर्म के, विभिन्न सम्प्रदाय के, विभिन्न मत-पंथों के इतने सारे सत्संगीजन इकट्ठे होते थे कि बैठने की तो नहीं लेकिन खड़े रहने की भी जगह नहीं रहती थी। जो देरी से आते उन्हें तो खड़े रहकर ही सत्संग का अमृतपान करना होता था। इस प्रकार हजारों की संख्या में लोग खड़े रहकर ही हरिरस का पान करते थे। उल्लासनगर में तो पूज्य बापू लोक-हृदय में पूर्ण रूपेण मानो छा ही गये। उल्लासनगर के भक्तों ने एक साधना आश्रम की स्थापना की। अति शीघ्र गति से एक विशाल सत्संग भवन, ध्यान हॉल एवं साधकों के लिए कुटीरों का निर्माण हुआ। दिनांक ९ मार्च के दिन पूज्यश्री के पावन कर कमलों द्वारा इनका उद्घाटन किया गया। उल्लासनगर मानो वैकुण्ठ बन गया।

उल्लासनगर में विश्व भर की तमाम चीजें मिलती थी। केवल एक ही कमी रह गई थी... सच्चे ब्रह्मनिष्ठ महापुरुषों के सान्निध्य, सत्संग एवं साधना केन्द्र की। यह कमी 'संत श्री आसारामजी आश्रम' की स्थापना के साथ ही दूर हो गई।

## सुरत आश्रम में १७ से २३ मार्च

दिनांक १७ से १९ मार्च सुरत में पूज्यश्री के सान्निध्य में होली के पर्व पर वेदान्त शक्तिपात साधना शिविर का एवं दिनांक २१ से २३ मार्च विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविर का आयोजन किया गया। होली का रंग, गुरुदेव का संग जब भक्तों को प्राप्त होता है तब उस सद्भाग्य की तुलना किससे की जाय? शुद्ध केसूड़े, केसर का रंग और इस रंग की वर्षा यांत्रिक पिचकारी के द्वारा सद्गुरुदेव एक साथ हजारों साधक - साधिकाओं के ऊपर करें... अद्भुत दृश्य था! रंगवृष्टि के साथ ही भक्तों के तन की तपन मिट जाती, मन की मलिनता पिघल जाती, चित्त की भ्रमणा भाग जाती और हृदय भाव-समाधि में डूब जाता था। हजारों हजारों साधकों का यह निजी अनुभव है। भोला बाबा ने ठीक ही कहा है कि :

**होली हुई तब जानिए पिचकारी सद्गुरु की लगे।**
**सब रँग कच्चे जाए उड़ इक रंग पक्के में रंगे॥**

## पाटण ( गुजरात ) में २७ से ३१ मार्च

दिनांक २७ से ३१ मार्च उत्तर गुजरात के पाटण में पूज्यश्री की दिव्य ज्ञानवर्षा का आयोजन हुआ। लाखों नर - नारी इस सत्संग में एकत्रित हो जाते थे। ऐतिहासिक नगर पाटण में आज तक कई धार्मिक आयोजन हुए थे उन सबसे बड़े में बड़ा, भव्य, विशाल आयोजन यह था। सत्संग मंडप भी बड़ा था फिर भी हररोज उसे ज्यादा बड़ा करना पड़ता था। हररोज लोग इतने बढ़ते गये कि मंडप छोटा ही पड़ता गया। जनता का उमंग और सत्संग-रस भी सराहनीय रहा। सत्संग समारोह की पूर्णाहुति के प्रसंग दिनांक ३१ मार्च की शाम को पूज्यश्री की जो शोभायात्रा निकली वह तो पाटण के इतिहास में अभूतपूर्व

थी। पाटण के मुख्य राजमार्ग पर भगवद्-भक्तिरस में पागल, श्रद्धा-भक्तिपूर्वक हरिनाम कीर्तन में नाचते कूदते हुए सारी जनता उमड़ पड़ी थी। चार दिन तक भरपेट हरिरस का पान करनेवाले लाखों लाखों लोग पूज्यश्री को पुष्पांजलि समर्पित करने उत्सुक होकर आ गये थे। इस भावपूर्ण दृश्य को केमरा भला क्या बता सकेगा? लेखिनी इसका क्या बयान कर सकेगी बेचारी? जितना लिखा जाय उतना कम है.... जितनी फोटो दिखाई जाय उतनी कम है।

## अहमदाबाद आश्रम में १ से ६ अप्रैल

दिनांक १ से ३ अप्रैल अहमदाबाद के आश्रम में विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविर एवं दिनांक ४ से ६ चेटीचन्ड के पर्व पर वेदान्त शक्तिपात साधना शिविर एवं चेटीचन्ड महोत्सव का आयोजन किया गया।

## संतरामपुर में ८ अप्रैल

दिनांक ८ अप्रैल के दिन पंचमहाल जिले के संतरामपुर में पूज्यश्री का एक दिवसीय सत्संग समारोह रखा गया। पूज्यश्री के दर्शन हेतु इतनी सारी जनता उमड़ पड़ी कि .... लाबयान है यह दृश्य! छोटा-सा संतरामपुर और उसमें पचास हजार का विराट जन समूह। और फिर हरएक के लिए प्रसाद की व्यवस्था। सचमुच पूज्यश्री की अजीब लीला है!

## गोधरा में ९ से १२ अप्रैल

दिनांक ९ से १२ अप्रैल तक गोधरा में भी अभूतपूर्व सत्संग समारोह का आयोजन किया गया। पंचमहाल जिले का मुख्य शहर गोधरा पूज्यश्री के लिए स्वागत-कमानों से सुशोभित हो उठा था। गोधरा की आधी जनता तो मुसलमानों की है फिर भी सनातन धर्म में प्रकाशित धर्मज्योति स्वरूप पू. बापू के सत्संग समारोह में हिन्दुओं के उपरान्त मुसलमान, सिख, ईसाई आदि सब लोग सत्संग सुनने आते थे। क्योंकि पू. बापू के सत्संग में केवल रूढिगत कथाएं ही नहीं होती अपितु सुखी, प्रसन्न जीवन जीने की अमूल्य कूँजियाँ एवं प्रयोग भी मिलते हैं और यह केवल पूज्यश्री के ही सत्संग की मौलिकता है। इसीलिए तमाम धर्म के अनुयायी लोग पूज्यश्री को अपना मानते हैं।

## मनावर में १३ से १५ अप्रैल

दिनांक १३ से १५ अप्रैल तक धार जिले के मनावर नगर में पूज्यश्री का सत्संग समारोह रखा गया। स्थान स्थान से लोग आ पहुँचे थे। डेढ़ लाख लोगों ने अमृतमय सत्संग का लाभ लिया। जिनके सान्निध्य से हृदय में अद्भुत शान्ति प्राप्त होती हो उनके सान्निध्य में बैठने का मौका कौन छोड़ सकता है? मनावर में सत्संग समिति की व्यवस्था भी बढ़िया थी। विराट मंडप, जलसेवा के लिए जगह जगह प्याऊ, फल के स्टॉल, स्वयंसेवकों की टुकड़ियाँ और बाहरगाँव से आनेवाले भक्तजनों के लिए भोजन - प्रसाद की व्यवस्था... यह सब सचमुच बहुत बहुत सराहनीय था। पूज्यश्री उज्जैन के सिंहस्थ कुंभ मेले में पधारें उससे पहले मनावर में ही कुंभमेला लग गया था।

## उज्जैन में सिंहस्थपर्व १६ अप्रैल से

दिनांक १६ अप्रैल के दिन उज्जैन में पूज्यश्री का पावन आगमन हुआ। उज्जैन माने सिंहस्थ कुंभ पर्व और सिंहस्थ कुंभ पर्व माने 'संत श्री आसारामजी नगर'...। सारे सिंहस्थ मेले के परिसर में तथा उज्जैन नगर में सर्वत्र एक ही चर्चा चल रही है कि सिंहस्थ कुंभ मेले में अगर कोई देखने योग्य, मुलाकात करने योग्य, अनुपम शान्ति देनेवाला कोई धाम है तो वह है 'संत श्री आसारामजी नगर'। स्वयंसेवकों के पुरुषार्थ एवं सेवा-भावना ने बड़नगर नाका के पास सवा आठ लाख वर्ग फूट विस्तार में यह चमत्कारिक अलौकिक स्थान खड़ा कर दिया है। अभी लाखों लोगों के हृदयों को आकर्षित करनेवाला, ज्ञान, ध्यान, भक्ति एवं योग के चमत्कार रूप यह माहौल है पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू का पड़ाव स्थल 'संत श्री आसारामजी नगर।'

मध्यप्रदेश सिंहस्थ पर्व का इन्तजार कर रहा था और अब सिंहस्थ पर्व का पर्याय शब्द बन गया है संत श्री आसारामजी नगर। सिंहस्थ पर्व माने संत श्री आसारामजी नगर और संत श्री आसारामजी नगर माने सिंहस्थ पर्व।

नगर के मुख्य द्वार में प्रवेश करते ही बायीं ओर कार्यालय है। उसके बाद आश्रम का एवं आश्रम की प्रवृत्ति का परिचय देनेवाला विडियो हॉल है जिसमें

दिनभर २० मिनट की विडियो कैसेट चलती रहती है। नये आगन्तुकों को विडियो के द्वारा पूज्य बापू का एवं आश्रम का परिचय मिलता है। तदनन्तर विभिन्न झाँकियाँ लगी हुई हैं जैसे कि प्रहल्लाद एवं होलिका की झाँकी, कर्मानुसार फल की झाँकी, विभिन्न संतों के तैलचित्रों का प्रदर्शन आदि। उसके बाद आता है संत श्री लीलाशाहजी द्वार। उसमें प्रविष्ट होते ही बायीं ओर भोजन मण्डप और निवास व्यवस्था में जाने का मार्ग है। दाहिनी ओर व्यासभवन है। व्यास भवन में पूज्य बापू की अमृतवाणी की ज्ञानगंगा बहती है। वहाँ लाखों संतप्त, दु:खी जन एवं भक्त, साधक, जिज्ञासु आदि सब कोई शान्ति, आनन्द एवं संत हृदय की दिव्य उष्मा पाते हैं। सुवर्ण जयंती महोत्सव एवं संत सम्मेलन भी इसी व्यासभवन में ही आयोजित किये गये।

संत श्री लीलाशाहजी द्वार की दाहिनी ओर पूज्य बापू की जीवन-लीलाओं का बयान करनेवाली चित्रकथा प्रदर्शनी स्थित है। उसके पास में साधु-संत एवं आमंत्रित अतिथियों के लिए निवास व्यवस्था है। नगर के मैदान में उद्यान, कलात्मक रथ, विभिन्न संतों की मूर्तियाँ, राधा-कृष्ण गोपीरास की चलित झाँकी, सत्साहित्य केन्द्र, ओडियो - विडियो कैसेट केन्द्र एवं 'ऋषि प्रसाद' कार्यालय और उसके पास में है केन्सर सुरक्षा केन्द्र का प्रदर्शन। सामने ही धातु का कुंभ है। मुख्य द्वार के सामने ही परम सद्गुरुदेव स्वामी श्री लीलाशाहजी मंदिर है। मुख्य प्रवेशद्वार की दाहिनी ओर जलपान, फल एवं जीवनावश्यक चीजों के रियायती स्टॉल, पानी के प्याऊ आदि हैं। आगन्तुक दर्शनार्थियों के लिए पूरा नगर एक विशिष्ट आकर्षण का केन्द्र बन गया है।

पिछले एक वर्ष से जो सुवर्ण जयंती वर्ष मनाया जा रहा था उसकी परिसमाप्ति दिनांक २३ अप्रैल के दिन १२ बजे हुई। बड़ी भव्यता से पूज्यश्री का जन्म महोत्सव मनाया गया। पूज्य बापू ने सुबह में १०-३० बजे जब संत श्री आसारामजी नगर में प्रवेश किया तब मुख्य प्रवेश द्वार पर हाथी के द्वारा सलामी दी गई। तदनन्तर सिर पर कुंभ धारण करनेवाली बालिकाओं स्वागत किया। व्यास भवन में ५१ बालिकाओं तथा ५१ समितियों के वरिष्ठ अध्यक्षों ने मंगल आरती की। उस समय ब्राह्मणों ने वैदिक मंत्रों से पूज्यश्री का अभिवादन किया। साधु संन्यासियों ने भी जन्म जयंती महोत्सव के जयगान किये। पू. बापू ने भी पुष्पवृष्टि से साधु-संतों का स्वागत किया। साधु-संतों ने भी पुष्पवृष्टि की। आमने सामने परस्पर अलौकिक भावपूर्ण दृश्य बन गया। तदनन्तर पूज्यश्री के पावन दर्शन हेतु दर्शनार्थियों की लम्बी कतारें लग गईं। हर एक को इस मंगल प्रसंग में पूज्यश्री के नजदीक जाकर प्रत्यक्ष दर्शन करने की आकांक्षा हो यह स्वाभाविक ही है। भक्तों ने इस प्रसंग पर 'बर्थ डे केक' बनाया था। मक्खन-मिसरी का प्रसाद जाहिर जनता को बाँटा गया।

शाम को ५ से ७ तक संत सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें स्वामी दयानन्दजी (अखण्डाश्रमवाले), स्वामी रामकिशोरजी महाराज (शाहपुरा रामस्नेही सम्प्रदायवाले), स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज (सुरतगिरि बंगलो, कनखल), स्वामी लोकेशानन्दजी, अन्य संतजन एवं सुप्रसिद्ध रामायण कथाकार श्री मोरारी बापू भी पधारे थे। संतों ने प्रासंगिक प्रवचन किये, जन्म महोत्सव की बधाइयाँ दी। उपस्थित भक्त समुदाय एवं आगन्तुक श्रद्धालुओं ने संतों के श्रीमुख से गुरुदेव की महत्ता, सहृदयता, समाजसेवा, नि:स्वार्थ करुणा, संतप्रेम, निर्दोष बालसहज प्रेम, परदु:खभंजनता आदि महिमा सुनकर आनन्द, संतोष एवं श्रद्धा-विश्वास का अनुभव किया।

हररोज सुबह ११ से १ और शाम को ५ से ७ बजे तक जाहिर जनता को पूज्यश्री के दर्शन होते थे। बाकी का समय पूज्यश्री एकान्त में रहते थे। दिनांक ३० अप्रैल के दिन अखिल भारत साधु समाज के सम्मेलन में भी हजारों धार्मिक जनों की सभा में पूज्यश्री पधारे थे। वहाँ उपस्थित जनता में संत-प्रेम, भगवद्-प्रेम एवं भारतीय संस्कृति के लिए आदर की भावना जागृत की थी।

## पूज्यश्री के आगामी सत्संग समारोह :

(१) सेलाना, (जि. रतलाम) में दिनांक २२ मई '९२ शाम से २४ मई '९२ दोपहर तक। बालक हायर सेकन्डरी स्कूल, सेलाना। (२) जावद (जि. मन्दसौर) में दिनांक २८ मई '९२ शाम से ३१ मई '९२ दोपहर तक। हायर सेकन्डरी स्कूल, जावद।

*

Registered with Registrar of Newspapers for India Under No. 48873/91
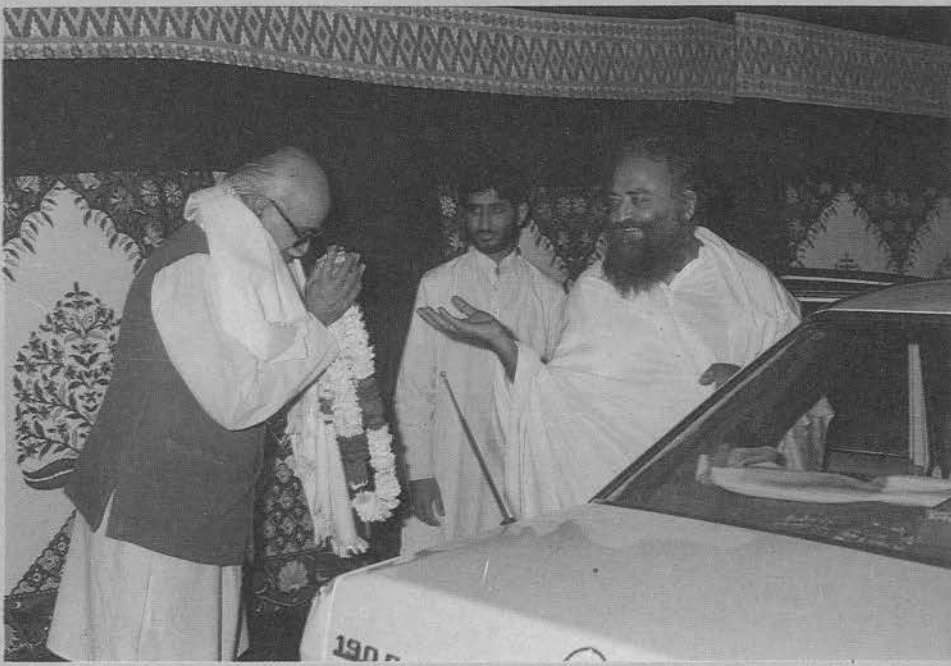
भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण अडवाणी पू. बापू को प्रणाम करके आशीर्वाद लेते हुए...

केन्द्रिय उपप्रसारण मंत्री डॉ. गिरजा व्यास पू. बापू से प्रसाद व आशीर्वाद ग्रहण करते हुए...